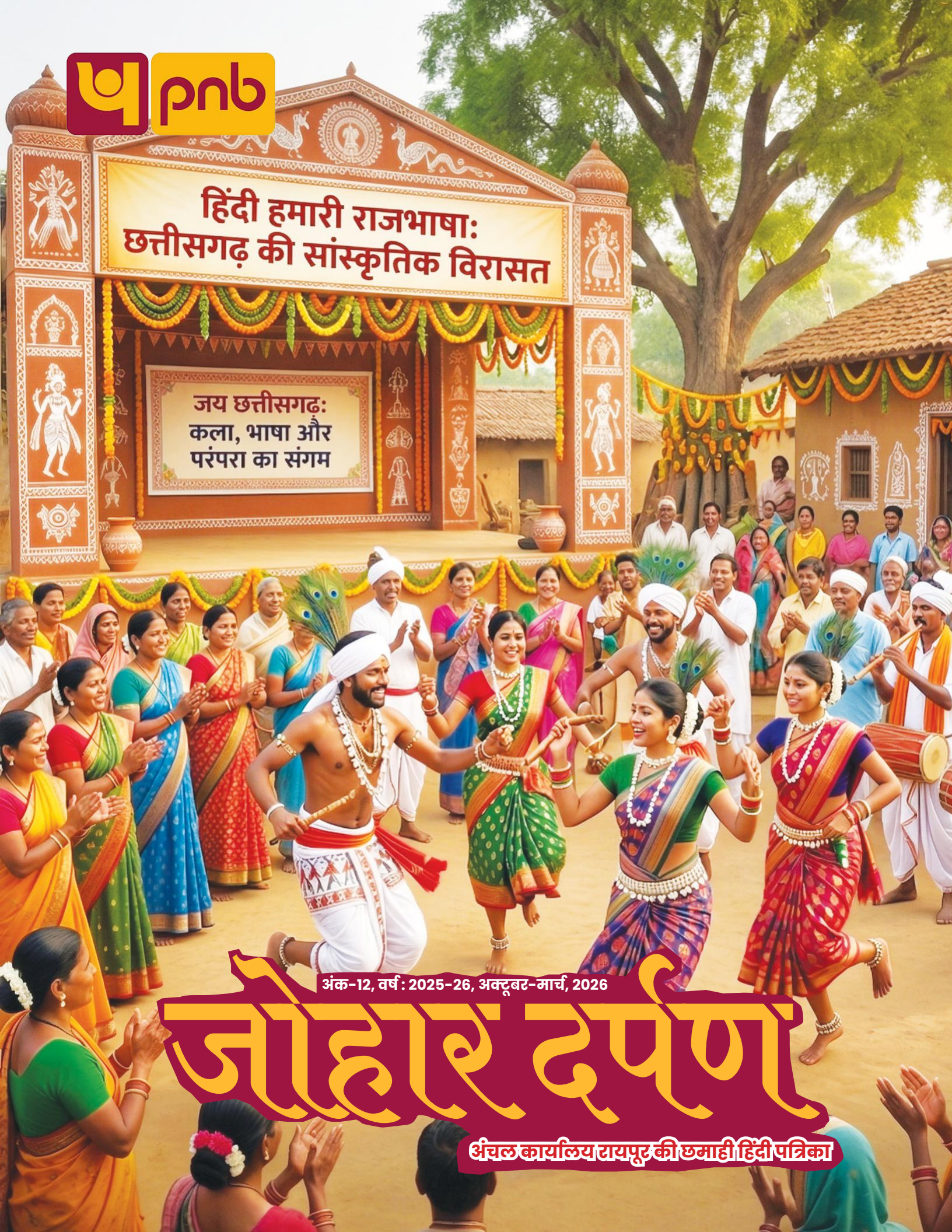


अंक-12, वर्ष : 2025-26, अक्टूबर-मार्च, 2026

# जौहार दर्पण

अंचल कार्यालय रायपुर की छमाही हिंदी पत्रिका

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, मध्य, पश्चिम एवं दक्षिणी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में बैंकों की श्रेणी में वर्ष 2024-25 हेतु अंचल कार्यालय, रायपुर को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री, माननीय श्री बंडी संजय कुमार जी एवं इंदौर के सांसद माननीय श्री शंकर लालवानी जी ने अंचल प्रबंधक महोदय श्री आशीष चतुर्वेदी जी को राजभाषा शील्ड प्रदान की एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा श्री मंगेश बनसोड को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

बैंक नशकास रायपुर 58वीं छमाही बैठक में वित्तीय वर्ष 2025 हेतु पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, रायपुर को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है। माननीय श्री नरेंद्र सिंह मेहरा जी, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नशकास राजभाषा शील्ड श्री श्री वीरेंद्र कुमार शर्मा, मंडल प्रमुख, रायपुर को प्रदान की गई। राजभाषा प्रमाण पत्र श्री मंगेश बनसोड़, वरिष्ठ प्रबन्धक-राजभाषा ने ग्रहण किया।

# सम्पादक मंडल

**मुख्य संरक्षक**
**श्री महेश कुमार वधवा**
अंचल प्रबंधक

## परामर्शदाता

**श्री मनीष देबबर्मा**
उप अंचल प्रबंधक
अंचल कार्यालय रायपुर

**श्री गजेंद्र सिंह**
उप अंचल प्रबंधक
अंचल कार्यालय रायपुर

**श्री वीरेंद्र कुमार शर्मा**
मंडल प्रमुख, रायपुर

**श्री जगदीश राय**
मंडल प्रमुख, बिलासपुर

**श्री अवधेश कुमार झा**
मंडल प्रमुख, रांची

**श्री राजेश श्रीवास्तव**
मंडल प्रमुख बोकारो

pnb
Oriental United
बढ़ें साथ मिलकर

**संपादक**
**श्री मंगेश बनसोड़**
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
अंचल कार्यालय, रायपुर

## सम्पादन सहयोग

**श्री बलदेव मुंडा**
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
मंडल कार्यालय, बोकारो

**श्री अशरफ अंसारी**
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
मंडल कार्यालय, बिलासपुर

**श्री विवेक साहू**
राजभाषा अधिकारी
मंडल कार्यालय, रायपुर

**श्री विकास कुमार**
प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, रांची

# जोहार दर्पण

**अंचल कार्यालय रायपुर की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका**

**अंक - 12, वर्ष - 2026, मार्च 2026**

## अनुक्रमणिका


| क्र | | शीर्षक | रचनाकार | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| 1 | संदेश | अंचल प्रबंधक का संदेश | | 4 |
| 2 | | संपादकीय | | 5 |
| 3 | यात्रा संस्मरण, कहानी, आलेख एवं अन्य | घटता कासा अनुपात : सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों के लिए चुनौती | अपर्णा सिंह | 6 |
| 4 | | हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का सामंजस्य | राजेश कुमार | 10 |
| 5 | | जीवन एक कसौटी | मनीष मेश्राम | 14 |
| 6 | | मन के पंख | शन्तु महतो | 16 |
| 7 | | जगन्नाथ पूरी : एक अविस्मरणीय यात्रा | लोकेश चावडा | 18 |
| 8 | | अमृता प्रीतम : साहित्यकार परिचय | सियावर तिवारी | 20 |
| 9 | | एयरपोर्ट के भीतर | भारती महानता | 23 |
| 10 | | माँ की ममता | आशुतोष पाणिग्राही | 24 |
| 11 | | खुद को प्रस्तुत करने का बेस्ट तरीका | प्रीति मंडावी | 26 |
| 12 | | पुस्तकें हमारी जीवन रक्षक है | धर्मेंद्र दास | 28 |
| 13 | | मेरा पहला गाँव, मेरी पहली पोस्टिंग : ग्रामीण बैंकिंग की अमिट यादें | कमाल किशोर झा | 30 |
| 14 | | मेरी तिरुवनंतपुरम यात्रा | विवेक कुमार साहू | 32 |
| 15 | | लखपति दीदी योजना - महिला सशक्तिकरण की नई दिशाभूमिका | अश्विन कांबले | 34 |
| 16 | | बैंकिंग प्रौद्योगिकीकरण : डिजिटल योग में बदलता स्वरूप | ऋषभ गजभिये | 35 |
| 17 | | युद्ध और मानवता : विनाश के साये में सिसकती सभ्यता | ईश्वर साहू | 37 |
| 18 | कव्यांजली | हिन्दी भारत की आत्मा | राहुल शर्मा | 27 |
| 19 | | मंजिल की जिद | कमल किशोर झा | 36 |
| 20 | | सोच | विनीता आनंद | 39 |
| 21 | अन्य | विविध गतिविधियां | | 40 |
| 22 | | मण्डल कार्यालयों की गतिविधियां | | 42 |



**प्रकाशन सम्पर्क सूत्र**
पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय रायपुर, प्लॉट संख्या 46, नया रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492018
ई-मेल : zoraipurraj.pnb.co.in, दूरभाष : 077 1221 0461



यह गृह पत्रिका केवल आंतरिक परिचालन हेतु है। 'पीएनबी जोहार दर्पण' में प्रकाशित कोई भी सामग्री जैसे लेख, कविता प्रेषक की स्वयं की है, इसमें संपादक अथवा बैंक का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

# अंचल प्रबंधक का संदेश

**महेश कुमार वधवा**
**अंचल प्रबंधक**
**अंचल कार्यालय, रायपुर**

प्रिय साथियों,

अंचल कार्यालय रायपुर की छमाही पत्रिका "पीएनबी जोहार दर्पण" के माध्यम से आप सभी से संवाद करने का अवसर पाकर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ। हमारे बैंक की गौरवशाली परंपरा, ग्राहकों के प्रति समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना ही हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

अंचल प्रबंधक के रूप में मेरी प्राथमिकता होगी कि हम अपने ग्राहकों को उच्चतम स्तर की बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करें। आधुनिक तकनीक का समुचित उपयोग, पारदर्शिता, और सेवा-भाव से युक्त कार्यप्रणाली ही हमारे संगठन की पहचान है। मेरा संकल्प है कि इन मूल्यों को और सुदृढ़ करते हुए हम अपने अंचल को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

हमारा विशेष ध्यान वसूली प्रबंधन पर रहेगा ताकि बैंक की परिसंपत्तियों की गुणवत्ता सुदृढ़ हो और वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित किया जा सके। साथ ही, हम डिजिटल उत्पादों और सेवाओं जैसे पीएनबी वन, पीएनबी आईएमपीएस/यूपीआई, पीएनबी डिजिटल ई-रुपये और पीएनबी इंटरनेट बैंकिंग के विस्तार पर बल देंगे, जिससे ग्राहकों को सुविधाजनक, सुरक्षित और त्वरित बैंकिंग अनुभव प्राप्त हो। डिजिटल नवाचार के माध्यम से हम न केवल सेवा की गति बढ़ाएँगे बल्कि वित्तीय समावेशन को भी और व्यापक बनाएँगे।

हमारा प्रयास रहेगा कि प्रत्येक शाखा में ग्राहक-केंद्रित वातावरण विकसित हो, वसूली और व्यवसाय वृद्धि में संतुलन कायम रहे, तथा डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग तक बैंकिंग सुविधाएँ पहुँचें। टीम भावना, अनुशासन और नवाचार के साथ हम अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे।

इसके अतिरिक्त बैंक की राजभाषा नीति का पालन करते हुए हम हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में ग्राहकों को सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। राजभाषा का प्रयोग न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है, बल्कि ग्राहकों के साथ सहज संवाद स्थापित करने में भी सहायक होता है। मैं हमारे अंचल के राजभाषा विभाग को गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय मध्य से क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त करने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। यह सम्पूर्ण रायपुर अंचल के लिए गौरव का विषय है और मुझे आशा है कि भविष्य में भी हम सभी इसी प्रकार मेहनत कर राजभाषा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करेंगे और बैंक को प्रगति की ओर बढाने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहेंगे।

मैं "पीएनबी जोहार दर्पण" के इस अंक से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े प्रत्येक स्टाफ सदस्य का आभार व्यक्त करता हूँ और पत्रिका के इस सुंदर और ज्ञानवर्धक अंक के लिए बधाई देता हूँ। यह पत्रिका पीएनबी जोहार दर्पण के स्टाफ सदस्यों को रचनाओं के रूप में अपने विचार व्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

आपका विश्वास और सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी अपनी प्रतिबद्धता, दक्षता और टीम वर्क के माध्यम से व्यवसाय वृद्धि के लक्ष्यों को अनुपालन के साथ प्राप्त करते हुए रायपुर अंचल को और ऊंचाइयों तक ले जाने में सफल होंगे।

**(महेश कुमार वधवा)**

# संपादकीय

**श्री मंगेश बनसोड़**
**वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा**
**अंचल कार्यालय, रायपुर**

पंजाब नैशनल बैंक की गौरवशाली परंपरा केवल वित्तीय सेवाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व की निरंतर यात्रा भी है। अंचल कार्यालय रायपुर की गृहपत्रिका इसी भावना का प्रतिबिंब है, जहाँ हम अपने कार्यकलापों, उपलब्धियों और संकल्पों को औपचारिक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र तीव्र गति से परिवर्तनशील है। डिजिटलीकरण, सुरक्षित लेन-देन और ग्राहक-केंद्रित नवाचार हमारी प्राथमिकताओं में सम्मिलित हैं। इन परिवर्तनों के बीच राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारे लिए केवल विधिक दायित्व नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है। हिंदी में कार्य करना हमारे ग्राहकों के साथ संवाद को अधिक सहज और आत्मीय बनाता है, साथ ही यह प्रशासनिक दक्षता और पारदर्शिता को भी सुदृढ़ करता है।

राजभाषा नीति का पालन करना हमारे लिए केवल विधिक दायित्व नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है। हिंदी में कार्य करना हमारे कर्मचारियों को अपनी अभिव्यक्ति को सरल बनाने का अवसर देता है और ग्राहकों को बैंकिंग सेवाओं का लाभ उनकी मातृभाषा में प्राप्त होता है। इससे बैंक और समाज के बीच विश्वास का सेतु और अधिक सुदृढ़ होता है।

गृहपत्रिका के माध्यम से हम बैंकिंग की नवीन उपलब्धियों, शाखाओं की प्रगति और कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रस्तुत करते हैं। साथ ही, राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करते हुए हम यह संदेश देना चाहते हैं कि आर्थिक विकास और भाषायी गौरव एक-दूसरे के पूरक हैं।

हम वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देते हुए राजभाषा हिंदी के प्रयोग को और अधिक व्यापक बनाएँगे। बैंकिंग और भाषा का यह संगम हमारे संगठन को न केवल पेशेवर दृष्टि से सुदृढ़ करेगा, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी समृद्ध बनाएगा।

**(मंगेश बनसोड)**

अर्पणा सिंह
उप प्रबन्धक
तुपूढ़ाना

# घटता कासा अनुपात : सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों के लिए चुनौती

## कासा क्या है

कासा चालू खाता और बचत खाता का संछिप्त रूप है, जो बैंक की जमा राशि के उस हिस्से को संदर्भित करता है जो चालू और बचत खाते के रूप में होता है। कासा एक सामान्य बैंक खाता है जिसमे से किसी भी समय धनराशि का उपयोग किया जा सकता है। कासा का उद्देश्य बचत को बढ़ावा देना है।

- **चालू खाता :** चालू खाता एक प्रकार का जमा खाता है जिसका उपयोग आम तौर पर दिन-प्रतिदिन के व्यापारिक लेनदेन के लिए किया जाता है। यह व्यवसायों, कंपनियों, सार्वजनिक उद्यमों और उद्यमियों के लिए उपयुक्त है, जो बार-बार त्वरित निकासी की अनुमति देता है। चालू खाते आम तौर पर जमा पर ब्याज नहीं देते हैं और उनके साथ कुछ शुल्क भी जुड़े हो सकते हैं।
- **बचत खाता :** बचत खाता एक जमा खाता है जहाँ आप अपना पैसा सुरक्षित रख सकते हैं, उस पर ब्याज अर्जित कर सकते हैं और आवश्यकता अनुसार पैसे निकाल सकते हैं। यह खाता नकद रखने का एक सुरक्षित तरीका प्रदान करता है और लोगों में बचत की आदत को बढ़ावा देता है।

## कासा अनुपात

कासा अनुपात, किसी बैंक की कुल जमा राशि के उस हिस्से को दर्शाता है जो चालू और बचत खातों से आता है। अनुपात जितना ज्यादा होगा, धन की लागत उतनी कम होगी। यह बैंक के वित्तीय स्वास्थय का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

## कासा अनुपात के महत्व

किसी बैंक की लाभप्रदता निर्धारित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मटट्रिक्स में से एक कासा है क्योकि कासा अनुपात इंगित करता है कि बैंक की कुल जमा राशि का कितना हिस्सा चालू और बचत दोनों खातों में है।

- **कम लागत वाला धन :** चालू और बचत खातों में जमा की गयी धनराशि पर बैंक को या तो ब्याज नहीं देना पड़ता है या बहुत कम ब्याज देना पड़ता है, जबकि सावधि जमाओं पर अपेक्षाकृत अधिक ब्याज देना होता है।
- **लाभप्रदता में वृद्धि :** कम लागत पर प्राप्त इस धन का उपयोग बैंक ऋण देने में करते हैं, जो की आम तौर पर अधिक ब्याज दरों पर होता है। इससे बैंक के शुद्ध ब्याज

मार्जिन में सुधार होता है और उसके समग्र लाभप्रदता बढ़ती है।

- **स्थिरता और तरलता :** कासा खाते बैंक के लिए धन का एक स्थिर और अपेक्षाकृत स्थिर स्रोत होते हैं। ये खाते ग्राहकों को धन तक आसान पहुँच भी प्रदान करते हैं।
- **बैंकिंग प्रदर्शन का संकेतक :** यह अनुपात किसी बैंक के वित्तीय स्वास्थ्य और धन के कुशल प्रबंधन का एक **महत्वपूर्ण संकेतक है**
- **कम एसेट-लायबिलिटी मिसमैच :** कासा में वृद्धि से बैंकों को एसेट-लायबिलिटी मिसमैच के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है, खासकर उन बैंकों में जो अल्पकालिक जमा पर लंबी अवधि के लिए फ़ंड करते हैं।
- **कम ब्याज लागत :** सावधि जमा और अन्य जमाओं के मुक़ाबले कासा जमाओं पर कम ब्याज देना पड़ता है, जिससे बैंक के लिए लागत कम होती जाती है।

**कासा अनुपात और इसकी गणना**

**कासा अनुपात की गणना का एक उदाहरण :** मान लीजिये कि बैंक के पास कुल जमा राशि 50000 करोड़ रुपये है, जिसमे से बचत खाते में जमा राशि 15000 करोड़ रुपये है और चालू खातों में जमा राशि 8000 करोड़ रुपये है। तब कासा अनुपात कि गणना इस प्रकार होगी:

कुल कासा जमा राशि : 15000 करोड़ + 8000 करोड़ = 23000 करोड़ रुपये

कासा अनुपात : (23000/50000)*100=46%

इसका मतलब है कि बैंक कि कुल जमा राशि का 46% हिस्सा कम लागत वाले चालू और बचत खातों से आता है।

**कासा अनुपात का घटता दर**

कासा अनुपात का घटता दर एक आर्थिक संकेतक है, जिसका अर्थ है कि अर्थव्यवस्था में लोगों द्वारा अपनी बचत को खातों में रखने की प्रवृति कम हो रही है, जिससे बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए उपलब्ध धन का अनुपात घटता है। यह रुझान व्यक्तियों द्वारा बचत को अन्य रूपों में बदलने या अपनी बचत का कम उपयोग करने का संकेत दे सकता है, जो वित्तीय प्रणाली में धन के प्रवाह को प्रभावित करता है और आर्थिक गतिविधियों को धीमा कर सकता है।

यह अनुपात बैंकिंग प्रणाली में तरलता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। जब यह अनुपात घटता है, तो इसका मतलब है कि लोग अपनी बचत को कासा खातों से निकालकर अन्य जगहों पर रख रहे हैं या उनका उपयोग कम कर रहे हैं।

**कासा अनुपात के घटने का कारण :**

**कासा अनुपात के घटने के कई संभावित कारण हो सकते हैं:**

- **बढ़ती वित्तीय साक्षारता :** लोग अपनी बचत का बेहतर प्रबंधन करना सीखते हैं और वित्तीय साधनों के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं, जिससे वे अपनी बचत को अधिक लाभकारी जगहों पर निवेश कर सकते हैं।
- **अन्य निवेश विकल्पों की उपलब्धता :** शेयर बाज़ार, म्यूचुअल फ़ंड, या अन्य वित्तीय उत्पादों में निवेश के अवसर मिलने पर लोग कासा खातों से पैसा निकालकर

उनमें निवेश करते हैं।

- **ब्याज दरों में बदलाव :** यदि बैंकों द्वारा कासा खातों पर दी जाने वाली ब्याज दरें कम हो जाती हैं, तो लोग अपना पैसा अन्य ब्याज कमाने वाले साधनों में लगाना पसंद कर सकते हैं।
- **आर्थिक अनिश्चितता :** यदि अर्थव्यवस्था में मंदी या अनिश्चितता का माहौल हो, तो लोग अपनी बचत का उपयोग दैनिक खर्चों में करने लगते हैं, जिससे कासा अनुपात कम हो सकता है।
- **नकद या डिजिटल भुगतान का बढ़ता उपयोग :** कुछ लोग नकद या डिजिटल भुगतान के साधनों का अधिक उपयोग करते हैं, जिससे उनकी बचत बैंक खाते में कम जमा होती है।

**कासा अनुपात के घटने से सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों पर प्रभाव**

**कासा अनुपात के गिरावट के कई प्रभाव हो सकते हैं :**

- **बैंकों पर प्रभाव :** बैंकों के पास ऋण देने के लिए कम पैसा उपलब्ध होता है, जिससे उनकी ऋण देने कि क्षमता पर असर पड़ सकता है और ये ब्याज दरों में वृद्धि कर सकते हैं।
- **आर्थिक गतिविधियों पर प्रभाव :** जब बैंकों के पास ऋण देने के लिए कम राशि होती है, तो इससे व्यवसायों और उद्यमियों के लिए पूंजी प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ धीमी हो सकती हैं।
- **वित्तीय बाज़ारों में बदलाव :** लोग अन्य वित्तीय बाज़ारों में निवेश करने के लिए अपने धन को कासा खातों से निकालते हैं, तो इन बाज़ारों में तरलता बढ़ जाती है और निवेश के अवसर बढ़ सकते हैं।

**कासा अनुपात और बैंक कि लाभप्रदता में सुधार के लिए रणनीतियाँ**

**कासा अनुपात और बैंक कि लाभप्रदता में सुधार के लिए कई रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं। जैसे :**

- **ग्राहक सेवा :** जब एक संभावित जमकर्ता चालू या बचत खाते में पैसा रखने का निर्णय लेता है तो अगला निर्णय बैंक के चयन का होता है। ग्राहक सेवा पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारक है जो जमाकर्ताओं के दिमाग में आता है। बैंकों को ग्राहक सेवा पर ध्यान देना चाहिए।
- **बचत खाता जमा में सुधार :** अधिकतम संख्या में व्यक्तिगत खाते खोलना सबसे अच्छा विकल्प है। एच एन आई खाते एवं ऐसे खाते जिनमे न्यूनतम राशि अधिक रखने की आवश्यकता हो, को खोलने कि उच्च प्राथमिकता को भी विकास के लिए एक मजबूत कारक के रूप में देखा जा सकता है।
- **चालू खाता जमा में सुधार :** चालू खाता जमा में बेहतर वृद्धि के लिए खुदरा व्यापारियों और छोटे उद्योगों का अधिक से अधिक संख्या में चालू खाता खोलना एक रणनीति होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त न्यूनतम औसत राशि अधिक रखने पर विशेष सुविधाओं वाले खातों की स्कीम होने से भी चालू खाते अधिक खुलेंगे।
- **सेवाओं और प्रोद्योगिकियों में सुधार :** वर्तमान वित्तीय माहौल में, ग्राहक सेवा का स्तर और उन्नत प्रोद्योगिकियों की उपलब्धता सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो किसी भी बैंक में संभावित जमा को आकर्षित करते हैं।

ग्राहक सेवा के मोर्चे पर हमारा स्तर 10 साल पहले की स्थिति से काफी बढ़ गया है। लेकिन मानक अभी भी संतोषजनक नहीं है और इसे हासिल करने के लिए हमें बहुत लंबा रास्ता तय करना होगा, वह भी बहुत कम समय में। कर्मचारी को एक जानकार एवं ग्राहक अनुकूल परिसंपत्ति के रूप में विकसित करने के लिए प्रशिक्षण प्रक्रिया और प्रशिक्षण प्रणाली को विकसित और मजबूत करने की आवश्यकता है। प्रोद्योगिकी वह पहलू है जहां अधिकतर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक निजी क्षेत्र के बैंकों से बहुत पीछे हैं। अधिकांश मामलों में उत्पाद और उपकरण उपलब्ध हैं, लेकिन ज्ञान की कमी के कारण हमारा स्टाफ उनका ठीक से उपयोग नहीं कर पाता है। स्टाफ सदस्यों को उत्पादों के बारे में उचित जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

- **एक ही छत के नीचे सभी वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना :** वर्तमान में हम अपने ग्राहकों को केवल अपने बैंक से जुड़ी कंपनियों के लिए अन्य सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं जसे बीमा, म्यूचुअल फ़ंड आदि। इससे ग्राहकों के अवसर सीमित हो जाते हैं और यदि कोई शहरी ग्राहक अन्य कंपनियों में निवेश करने की योजना बनाता है तो उसके प्रवासन की भी संभावना शुरू हो जाती है। सभी प्रमुख कंपनियों के उत्पादों की पेशकश करके ग्राहक को निवेश का अवसर प्रदान करना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। यदि ग्राहकों के लिए उत्कृष्ट ग्राहक सेवा और बेहतर प्रोद्योगिकी द्वारा समर्पित सम्पूर्ण वित्तीय योजना प्रदान की जाएगी, तो निश्चित रूप से बचत बैंक जमा में सुधार करने में मदद मिलेगी।
- **निष्क्रिय खातों को चालू करना :** आजकल बहुत कम ऐसी जनता है जिनका खाता किसी भी बैंक में नहीं है। इसलिए यदि किसी ग्राहक का खाता हमारे बैंक में निष्क्रिय अवस्था में है, इसका अर्थ यह है कि वह व्यक्ति किसी और वित्तीय संस्था से अपने लेनदेन कर रहा है। इसका कारण कुछ भी हो सकता है- हमार व्यवहार, हमारे उत्पादों कि गुणवत्ता, ग्राहक कि समस्या का समय से निराकरण न होना आदि। अतः ऐसे खाताधारकों से संपर्क कर उनको अपेक्षित सेवाएँ देने से खातों को चालू किया जा सकता है जिसके परिणाम स्वरूप कासा में निश्चित रूप से वृद्धि होगी क्योंकि जब ग्राहक खातों को चालू रखेंगे तो उनमे कुछ राशि भी अवश्य रखेंगे।

**निष्कर्ष :** उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि बैंकों की लाभप्रदता को बढ़ाने के लिए कासा का कितना महत्वपूर्ण योगदान है। अतः सभी बैंक कर्मचारियों का ये दायित्व बनता है कि वे अपने बैंक का कासा पोर्टफोलियो एवं कासा अनुपात बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दें क्योकि बैंक लाभ में रहेंगे तो वे देश कि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दे सकते हैं।

संक्षेप में, कासा अनुपात का घटना वित्तीय परिदृश्य में लोगों की बचत की आदतों में बदलाव का एक महत्वपूर्ण संकेत है, जो आर्थिक गतिविधियों और वित्तीय बाज़ारों को प्रभावित करता है। एक उच्च कासा अनुपात किसी भी बैंक के लिए एक सकारात्मक संकेत है जो दर्शाता है कि बैंक के पास कम लागत पर धन उपलब्ध है और वह आर्थिक रूप से मजबूत स्थिति में है।

# हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का सामंजस्य

राजेश कुमार
मुख्य प्रबंधक सामान्य प्रशासन
मंडल कार्यालय : बिलासपुर

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, जहाँ "कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी" की कहावत चरितार्थ होती है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची (Eighth Schedule) में कुल 22 भाषाओं को स्थान दिया गया है, जो इस देश की भाषाई विविधता को दर्शाती हैं। इस विविधता के बीच हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का सामंजस्य केवल एक भाषाई जरूरत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता का आधार है।

**(क) सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जुड़ाव: -** भारतीय भाषाओं का आपसी संबंध अत्यंत गहरा है। उत्तर भारत की अधिकांश भाषाएँ (जैसे हिन्दी, मराठी, बंगाली, गुजराती) संस्कृत से जन्मी हैं, जबकि दक्षिण की द्रविड़ भाषाएँ (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम) अपनी स्वतंत्र पहचान रखते हुए भी सांस्कृतिक रूप से हिन्दी के साथ जुड़ी हुई हैं। भक्ति काल के दौरान, तुलसीदास, कबीर, मीराबाई और दक्षिण के आलवार संतों ने भाषाई सीमाओं को तोड़कर एक साझा सांस्कृतिक चेतना का निर्माण किया।

**(ख) सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक जुड़ाव :** एक विस्तृत विश्लेषण: - भारतीय भाषाओं के बीच का संबंध केवल व्याकरणिक नहीं, बल्कि आत्मिक और ऐतिहासिक है। सदियों से भारत की विभिन्न भाषाओं ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है, जिससे एक 'साझा भारतीय मानस' का निर्माण हुआ है।

1. **साझा भाषाई जड़ें (Common Linguistic Roots):-** भारत की अधिकांश भाषाओं का स्रोत प्राचीन संस्कृत रही है। उत्तर भारतीय भाषाएँ (हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, बंगाली) जहाँ सीधे तौर पर संस्कृत के 'तद्भव' और 'तत्सम' शब्दों से समृद्ध हैं, वहीं दक्षिण की द्रविड़ भाषाएँ (जैसे तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम) भी शब्दावली के स्तर पर संस्कृत से गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह भाषाई सेतु ही है कि एक हिन्दी भाषी व्यक्ति दक्षिण भारत के मंदिरों में जाकर भी वहां के मंत्रों और धार्मिक शब्दावली के माध्यम से जुड़ाव महसूस करता है।

2. **भक्ति आंदोलन :** भाषाई एकता का स्वर्ण युग:- ऐतिहासिक रूप से, 12वीं से 17वीं शताब्दी के बीच चले भक्ति आंदोलन ने भाषाई दीवारों को पूरी तरह ढहा दिया था।

- दक्षिण के आलवार संतों और बसन्ना के विचारों को उत्तर भारत के संतों ने अपनाया।
- गुरु ग्रंथ साहिब इसका सबसे बड़ा प्रमाण है, जिसमें पंजाबी के साथ-साथ ब्रजभाषा, खड़ी बोली, मराठी और फ़ारसी के शब्द मिलते हैं।
- संत नामदेव (महाराष्ट्र), चैतन्य महाप्रभु (बंगाल), शंकरदेव (असम) और कबीर व तुलसी (उत्तर भारत) ने अलग-अलग भाषाओं में एक ही प्रकार के मानवीय

मूल्यों का प्रचार किया।

3. **स्वतंत्रता संग्राम और भाषाई सामंजस्य : -** भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भाषा राष्ट्रीय एकता का सबसे सशक्त हथियार बनी। महात्मा गांधी (गुजराती भाषी) ने हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' के रूप में इसलिए प्रस्तावित किया क्योंकि वे इसकी सर्वव्यापकता को समझते थे।

- बाल गंगाधर तिलक (मराठी भाषी) और सुभाष चंद्र बोस (बंगाली भाषी) जैसे नेताओं ने हिन्दी के महत्व को स्वीकार किया ताकि देश को एक सूत्र में पिरोया जा सके।
- उस समय पत्र-पत्रिकाओं ने एक भाषा के विचारों को दूसरी भाषा में अनुवादित कर राष्ट्रवाद की अलख जगाई।

4. **साहित्य और लोक कलाओं का आदान-प्रदान : -** भारतीय भाषाओं का सांस्कृतिक जुड़ाव हमारी लोक कथाओं और महाकाव्यों में दिखता है।

- **रामायण और महाभारत :** ये दो महाकाव्य लगभग हर भारतीय भाषा में लिखे गए हैं (जैसे तमिल में कंब रामायण, बंगाली में कृत्तिवास रामायण)। इनकी कथाएँ अलग हो सकती हैं, लेकिन इनके प्राण एक ही हैं।
- आज भी भारतीय सिनेमा और साहित्य एक-दूसरे की कहानियों को अपनाकर भाषाई दूरियों को कम कर रहे हैं।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ कभी भी प्रतिद्वंदी नहीं रही हैं, बल्कि वे एक विशाल वटवृक्ष की विभिन्न शाखाएँ हैं जो एक ही जमीन (भारतीय संस्कृति) से पोषण प्राप्त करती हैं।

(ग) हिन्दी: संपर्क भाषा के रूप में: - हिन्दी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के बीच एक 'सेतु' का कार्य करती है। जब एक तमिल भाषी व्यक्ति और एक बंगाली भाषी व्यक्ति आपस में बात करते हैं, तो वे अक्सर हिन्दी या अंग्रेजी का सहारा लेते हैं। यहाँ हिन्दी का उद्देश्य किसी क्षेत्रीय भाषा को दबाना नहीं, बल्कि संवाद को सुगम बनाना है। भारत जैसे विशाल और बहुभाषी देश में 'संपर्क भाषा' (Link Language) वह सेतु है जो अलग-अलग मातृभाषा बोलने वाले नागरिकों को आपस में जोड़ती है। हिन्दी ने ऐतिहासिक और व्यावहारिक कारणों से इस भूमिका को बखूबी निभाया है।

1. **भौगोलिक व्यापकता और सुगमता : -** हिन्दी केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं है। व्यावसायिक गतिविधियों, पर्यटन और प्रवासन (Migration) के कारण यह देश के कोने-कोने में पहुँची है। जनगणना के आँकड़े बताते हैं कि हिन्दी भारत में सबसे अधिक समझी जाने वाली भाषा है। इसकी सरल व्याकरणिक संरचना और अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता इसे एक 'जनभाषा' बनाती है, जिससे एक कश्मीरी और एक कन्याकुमारी का निवासी बुनियादी संवाद कर पाते हैं।

2. **बाजार और रोजगार की भाषा :-** वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी 'बाजार की भाषा' बनकर उभरी है। भारत के बड़े महानगरों में व्यापारिक लेन-देन के लिए हिन्दी एक साझा मंच प्रदान करती है। मनोरंजन उद्योग, विशेषकर बॉलीवुड और OTT प्लेटफॉर्म्स, ने गैर-हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। आज दक्षिण और पूर्वोत्तर भारत के युवा भी फिल्मों और संगीत के माध्यम से सहजता से हिन्दी समझ रहे हैं।

3. **संवैधानिक और प्रशासनिक आधार :-** भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (Article 343) के तहत हिन्दी को संघ की 'राजभाषा' का दर्जा दिया गया है। साथ ही, अनुच्छेद 351 (Article 351) सरकार को यह निर्देश देता है कि वह हिन्दी का प्रसार बढ़ाए ताकि यह भारत की मिश्रित संस्कृति (Composite Culture) के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

4. **डिजिटल युग और तकनीक :-** इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में हिन्दी का स्वरूप और अधिक वैश्विक हुआ है। Google और अन्य तकनीकी दिग्गजों ने 'वॉयस सर्च' और 'अनुवाद' जैसी सेवाओं के माध्यम से

हिन्दी को तकनीक से जोड़ा है। इसने विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान को और भी सरल बना दिया है।

**(घ) सामंजस्य की चुनौतियाँ :-** समय-समय पर भाषाई वर्चस्व के डर से 'हिन्दी थोपने' के विवाद सामने आते रहे हैं। यह समझना आवश्यक है कि हिन्दी की उन्नति अन्य भारतीय भाषाओं की कीमत पर नहीं हो सकती। वास्तविक सामंजस्य तब आता है जब हम अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व महसूस करने के साथ-साथ दूसरी भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करें। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच गहरा ऐतिहासिक संबंध होने के बावजूद, वर्तमान समय में इनके सामंजस्य के मार्ग में कुछ महत्वपूर्ण बाधाएँ और चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इन चुनौतियों को समझना ही समाधान की ओर पहला कदम है:

1. **भाषाई वर्चस्व का भय (Fear of Linguistic Hegemony) : -** सबसे बड़ी चुनौती 'हिन्दी थोपने' (Hindi Imposition) की धारणा है। दक्षिण भारतीय राज्यों और पश्चिम बंगाल जैसे क्षेत्रों में यह आशंका बनी रहती है कि यदि हिन्दी को अत्यधिक बढ़ावा दिया गया, तो उनकी अपनी समृद्ध क्षेत्रीय भाषाएँ और सांस्कृतिक पहचान हाशिए पर चली जाएगी। यह 'वर्चस्व बनाम अस्तित्व' की लड़ाई सामंजस्य में सबसे बड़ा रोड़ा है।
2. **राजनीतिकरण (Politicization) : -** अक्सर भाषा को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। क्षेत्रीय अस्मिता को जगाने के लिए राजनीतिक दल भाषाई भावनाओं का सहारा लेते हैं, जिससे हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं के बीच एक कृत्रिम दीवार खड़ी हो जाती है। यह भाषाई गौरव को भाषाई कट्टरता में बदल देता है।
3. **त्रिभाषा सूत्र का असमान कार्यान्वयन : -** भारत सरकार ने त्रिभाषा सूत्र (Three-Language Formula) का सुझाव दिया था, जिसमें हिन्दी भाषी राज्यों को एक दक्षिण भारतीय भाषा सीखने और गैर-हिन्दी भाषी राज्यों को हिन्दी सीखने का प्रावधान था। लेकिन व्यावहारिक रूप से:
   - उत्तर भारत के राज्यों ने दक्षिण भारतीय भाषाओं को सीखने में रुचि नहीं दिखाई।
   - इसके विपरीत, दक्षिण भारत में हिन्दी को अनिवार्य किए जाने पर विरोध हुआ। इस असंतुलन ने भाषाई दूरी को और बढ़ा दिया है।
4. **अंग्रेजी का बढ़ता प्रभुत्व : -** विडंबना यह है कि जहाँ भारतीय भाषाएँ आपस में संघर्ष कर रही हैं, वहीं अंग्रेजी 'स्टेटस सिंबल' और 'रोजगार की अनिवार्य भाषा' के रूप में दोनों पर हावी हो रही है। उच्च शिक्षा, न्यायपालिका और विज्ञान के क्षेत्र में आज भी भारतीय भाषाओं के बजाय अंग्रेजी का वर्चस्व है। यह स्थिति भारतीय भाषाओं के आपसी विकास को बाधित करती है।
5. **शुद्धतावाद का आग्रह (Linguistic Purism): -** हिन्दी और अन्य भाषाओं के कुछ विद्वान भाषा की 'शुद्धता' पर इतना जोर देते हैं कि वे दूसरी भाषाओं के शब्दों को स्वीकार नहीं करते। जब तक हिन्दी अन्य भारतीय भाषाओं (जैसे तमिल, मराठी, बांग्ला) के प्रचलित शब्दों को अपने भीतर नहीं समेटेगी, तब तक वह वास्तव में 'अखिल भारतीय' स्वरूप धारण नहीं कर पाएगी।

   सामंजस्य की चुनौती का हल "हिन्दी बनाम क्षेत्रीय भाषा" में नहीं, बल्कि "भारतीय भाषाएँ बनाम अंग्रेजी का मानसिक दासत्व" में खोजना होगा।

**(ङ) सह-अस्तित्व और आदान-प्रदान : -** आज की हिंदी में अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द घुल-मिल गए हैं। मराठी से 'लागू', बांग्ला से 'उपन्यास' और दक्षिण भारतीय भाषाओं के खान-पान संबंधी शब्द अब हिन्दी का अभिन्न हिस्सा हैं। इसी तरह, आधुनिक तकनीक और सिनेमा ने भाषाओं के बीच की दूरी कम की है। 'डबिंग' और 'अनुवाद' ने साहित्य और कला को एक भाषा से दूसरी भाषा तक पहुँचाने में बड़ी भूमिका निभाई है। भारतीय भाषाओं का सौंदर्य उनके सह-अस्तित्व में है। यह कोई शून्य-योग खेल (Zero-sum game) नहीं है जहाँ एक भाषा की उन्नति दूसरी के पतन का कारण

बने, बल्कि यह एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र है जहाँ सभी भाषाएँ एक-दूसरे से पोषण लेती हैं।

1. **शब्दकोशों का समावेश (Lexical Integration) :-** हिन्दी ने कभी भी स्वयं को बंद कमरे में नहीं रखा। आज की व्यावहारिक हिन्दी में अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द इस कदर घुल गए हैं कि उन्हें अलग करना कठिन है:

- मराठी से 'लागू', 'तदर्थ' और 'बाप रे' जैसे शब्द आए।
- बांग्ला से 'उपन्यास', 'प्राणपण' और 'भले-मानस' जैसे शब्द हिन्दी साहित्य का हिस्सा बने।
- दक्षिण भारतीय भाषाओं से इडली, डोसा, सांभर जैसे व्यंजनों के साथ-साथ कई सांस्कृतिक शब्द हिन्दी शब्दावली में रचे-बसे हैं।

2. **अनुवाद की भूमिका (Role of Translation) :-** साहित्यिक आदान-प्रदान ने भाषाओं के बीच की दूरियों को पाट दिया है। भारतीय साहित्य अकादमी जैसी संस्थाओं ने क्षेत्रीय भाषाओं के कालजयी साहित्य को हिन्दी और अन्य भाषाओं में अनुवादित कर एक साझा पाठक वर्ग तैयार किया है। रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाएँ हों या सुब्रमण्यम भारती की कविताएँ, अनुवाद के माध्यम से ही वे पूरे भारत की धरोहर बनीं।

3. **मनोरंजन और पॉप-कल्चर (Media and Pop Culture) :-** वर्तमान समय में 'डबिंग' क्रांति ने सह-अस्तित्व को एक नई ऊँचाई दी है। 'बाहुबली', 'आरआरआर' और 'कांतारा' जैसी फिल्मों की सफलता यह दर्शाती है कि कहानी और भावनाएँ भाषाई सीमाओं को पार कर जाती हैं। दक्षिण की फिल्मों को हिन्दी भाषी क्षेत्रों में उतना ही प्रेम मिल रहा है, जितना हिन्दी फिल्मों को अन्य क्षेत्रों में। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सबसे आधुनिक और प्रभावी रूप है।

4. **तकनीकी सहूलियत (Technological Convergence) :-** आज के डिजिटल युग में, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर 'हिंग्लिश' के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं का मिश्रण (Code-switching) देखा जा सकता है। Google Translate और अन्य AI टूल्स ने एक भाषा के कंटेंट को दूसरी भाषा में उपभोग करना सरल बना दिया है, जिससे भाषाओं के बीच का 'डिजिटल गैप' कम हो रहा है।

हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ एक ही माला के अलग-अलग फूल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी त्रिभाषा सूत्र (Three-language formula) के माध्यम से भाषाई सामंजस्य पर जोर दिया गया है। जब तक हम एक-दूसरे की भाषाओं को स्नेह और सम्मान के साथ नहीं अपनाएंगे, तब तक भाषाई एकता अधूरी रहेगी। हिन्दी का विकास तभी संभव है जब वह सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर 'बड़ी बहन' की भूमिका निभाए।

हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का सामंजस्य केवल प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, बल्कि भारत की 'विविधता में एकता' के संकल्प की कसौटी है। ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिक तकनीक ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत की सभी भाषाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं, न कि प्रतिद्वंद्वी।

भाषा संवाद का माध्यम है, विवाद का नहीं। जहाँ हिन्दी एक 'संपर्क भाषा' के रूप में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम को जोड़ने वाले धागे का काम करती है, वहीं क्षेत्रीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक जड़ों को सींचती हैं। वास्तविक सामंजस्य तभी संभव है जब हम 'भाषाई कट्टरता' को त्यागकर 'भाषाई संवेदनशीलता' को अपनाएं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जैसे प्रयास इस दिशा में नई उम्मीद जगाते हैं, जो मातृभाषा के सम्मान के साथ-साथ बहुभाषावाद को बढ़ावा देते हैं।

अंततः, भारत का भविष्य किसी एक भाषा के वर्चस्व में नहीं, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के सह-अस्तित्व और परस्पर सम्मान में निहित है। जब हम एक-दूसरे की भाषाओं को स्नेह से अपनाएंगे, तभी 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का स्वप्न पूर्ण रूप से साकार होगा। जैसा कि प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत ने कहा था कि हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सबसे सरल स्रोत है, लेकिन यह स्रोत तभी समृद्ध होगा जब इसमें अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की सरिताओं का जल मिलता रहेगा।

# जीवन एक कसौटी

**मनीष मेश्राम**
वरिष्ठ प्रबंधक
बालोद शाखा

जीवन एक यात्रा है, जिसमें हर मोड़ पर हमें किसी न किसी कसौटी से गुजरना पड़ता है। यह कसौटी कभी परिस्थितियों की होती है, कभी संबंधों की, और कभी आत्म-विश्वास की। इस कहानी में हम एक ऐसे युवक की यात्रा को देखेंगे, जिसने जीवन की कठिनाइयों को अपनी ताकत बना लिया और हर कसौटी पर खरा उतरते हुए सफलता की ऊँचाइयों को छू लिया।

रवि एक छोटे से गाँव में जन्मा था। उसके पिता एक किसान थे और माँ गृहिणी। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, लेकिन रवि के माता-पिता ने उसे पढ़ाई के महत्व को समझाया और हर संभव प्रयास किया कि वह स्कूल जा सके।

रवि बचपन से ही जिज्ञासु था। उसे किताबों से प्यार था, लेकिन गाँव के स्कूल में सीमित संसाधन थे। वह अक्सर पुराने अखबारों और फटे-पुराने किताबों से ज्ञान प्राप्त करता। उसके शिक्षक उसकी लगन से प्रभावित थे, लेकिन रवि को आगे की पढ़ाई के लिए शहर जाना था, जो परिवार के लिए एक बड़ी चुनौती थी।

दसवीं कक्षा के बाद रवि ने ठान लिया कि वह शहर जाकर पढ़ेगा। उसने एक छोटे से कोचिंग संस्थान में दाखिला लिया और साथ ही एक चाय की दुकान पर काम करना शुरू किया। सुबह पढ़ाई, दोपहर में काम और रात को फिर पढ़ाई – यही उसकी दिनचर्या बन गई।

यह समय उसकी पहली कसौटी थी – आत्मनिर्भरता की। उसने अपने खर्च खुद उठाए, और कभी किसी से मदद नहीं मांगी। उसकी मेहनत रंग लाई और उसने बारहवीं की परीक्षा में जिले में टॉप किया।

राधा, रवि की बचपन की मित्र, गाँव में रहकर महिलाओं के लिए काम कर रही थी। उसने स्वावलंबन समूह की स्थापना की, जिससे महिलाएँ सिलाई, बुनाई और हस्तकला में प्रशिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनीं। राधा ने रवि को नैतिकता और सेवा का महत्व समझाया

रवि ने इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा दी, लेकिन पहली बार में असफल हो गया। यह उसके लिए एक बड़ा झटका था। उसने खुद से सवाल किए – क्या वह योग्य नहीं है? क्या उसकी मेहनत बेकार गई?

लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने अपनी गलतियों को पहचाना, और अगले साल फिर से परीक्षा दी। इस बार उसने देश के एक प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश पाया। यह उसकी दूसरी कसौटी थी – असफलता को स्वीकार कर उससे सीखना।

शहर के कॉलेज में रवि की मुलाकात प्रोफेसर सेन से हुई। वे सख्त लेकिन न्यायप्रिय शिक्षक थे। उन्होंने रवि को सिखाया कि ज्ञान का मूल्य तभी है जब वह चरित्र के साथ जुड़ा हो। जब रवि को नौकरी में नैतिक संकट का सामना करना पड़ा, प्रोफेसर सेन की सीख ने उसे सही निर्णय लेने में मदद की।

कॉलेज में रवि को एक स्टार्टअप में काम करने का मौका मिला। वहाँ उसे एक ऐसा प्रोजेक्ट दिया गया जिसमें उसे डेटा को गलत तरीके से प्रस्तुत करने को कहा गया ताकि कंपनी को लाभ हो।

यह उसकी तीसरी कसौटी थी – नैतिकता की। उसने उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया, भले ही उसे नौकरी छोड़नी पड़ी। उसने अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

कॉलेज के अंतिम वर्ष में रवि को अपने पिता की तबीयत खराब होने की खबर मिली। उसे तुरंत गाँव लौटना पड़ा। वहाँ आकर उसने देखा कि खेतों की हालत खराब थी और परिवार पर कर्ज का बोझ था।

उसने अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने का निर्णय लिया और परिवार को संभालने लगा। यह उसकी चौथी कसौटी थी – संबंधों की। उसने अपने सपनों को कुछ समय के लिए स्थगित कर अपने परिवार को प्राथमिकता दी।

राधा का रवि के जीवन में एक विशेष स्थान था। वह न केवल उसकी प्रेरणा थी, बल्कि उसकी नैतिकता और मूल्यों की संरक्षक भी। जब रवि नौकरी छोड़ने के निर्णय से जूझ रहा था, राधा ने उसे याद दिलाया – "सच्चाई की राह कठिन होती है, लेकिन अंत में वही जीतती है।"

कुछ वर्षों बाद, रवि ने फिर से अपने करियर की शुरुआत की। उसने एक ऑनलाइन कोर्स किया, और धीरे-धीरे एक स्वतंत्र तकनीकी सलाहकार बन गया। उसकी ईमानदारी और मेहनत ने उसे पहचान दिलाई। उसने अपने गाँव में एक डिजिटल शिक्षा केंद्र शुरू किया, जहाँ बच्चों को मुफ्त में तकनीकी शिक्षा दी जाती थी।

अब वह न केवल अपने परिवार का सहारा था, बल्कि अपने गाँव के बच्चों के लिए प्रेरणा भी बन गया था।

रवि की कहानी हमें यह सिखाती है कि जीवन में आने वाली हर कसौटी हमें कुछ सिखाने आती है। अगर हम धैर्य, आत्म-विश्वास और नैतिकता के साथ इन कसौटियों का सामना करें, तो जीवन हमें वह सब देता है जिसकी हम कल्पना करते हैं।

जीवन की कसौटी पर खरा उतरना आसान नहीं होता, लेकिन जो इससे डरते नहीं, वही इतिहास रचते हैं।

# मन के पंख

शन्तु महतो
वरिष्ठ प्रबंधक
महासमुंद शाखा

कहते हैं, ज़िंदगी की असली ताक़त हमारे भीतर छुपी होती है। भाग्य कितनी भी बार ठोकर मार ले, लेकिन सच तो यह है कि हार तब होती है जब हम खुद हार मान लेते हैं। यह कहानी है अनिरुद्ध की, एक साधारण गाँव के लड़के की, जो एक दिन अपने गाँव की सीमाओं से निकलकर दुनिया को नए नजरिए से देखने लगा।

उत्तर प्रदेश के छोटे-से गाँव रामपुर में अनिरुद्ध का जन्म हुआ। बचपन में ही उसके पिता का देहांत हो गया था और घर का खर्च उसकी माँ, सुमित्रा देवी, खेतों में मजदूरी करके चलाती थीं।

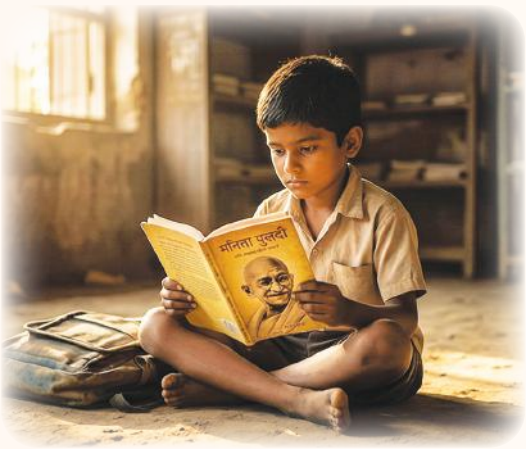

गाँव में शिक्षा की स्थिति अच्छी नहीं थी। स्कूल में पुराने टीन की छतें थीं, किताबें फटी-पुरानी, और अध्यापक अक्सर महीने में सिर्फ कुछ ही दिन आते थे।

लेकिन अनिरुद्ध के भीतर एक आग थी - दुनिया देखने की और कुछ अलग करने की।

शाम को वह खेतों के काम के बाद गाँव के पंचायत भवन में रखी एक पुरानी किताबों की अलमारी पर जाता। वहाँ से उसने पहली बार महात्मा गांधी, अब्दुल कलाम, और स्वामी विवेकानंद के बारे में पढ़ा। शब्दों ने उसके भीतर सपनों के बीज बो दिए।

कक्षा 10वीं में अनिरुद्ध के लिए परिस्थिति कठिन हो गई।

उसकी माँ ने कहा,"बेटा, अब स्कूल छोड़कर काम करना पड़ेगा, नहीं तो घर कैसे चलेगा?"

लेकिन अनिरुद्ध के शिक्षक, शर्मा जी, उसकी आँखों में चमक देखते थे। उन्होंने उसकी माँ को समझाया,

"सुमित्रा जी, अगर इसे पढ़ने का मौका मिला, तो यह जरूर आगे बढ़ेगा।"

शर्मा जी ने अपनी जेब से उसकी फीस भरी और किताबें खरीद दीं। लेकिन असली संघर्ष सिर्फ फीस चुकाने का नहीं था। असली संघर्ष था पढ़ाई और काम को साथ लेकर चलना।

सुबह 5 बजे खेत में पानी लगाना, फिर स्कूल जाना, और शाम को दुकान पर मजदूरी करना - यही उसकी दिनचर्या बनी।

कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में अनिरुद्ध ने कड़ी मेहनत की, लेकिन नतीजा आशा के विपरीत आया - वह 2 विषयों में फेल हो गया।

यह उसके लिए पहला बड़ा झटका था। गाँव के लोग ताने मारने लगे,

"कहा था न... पढ़ाई-लिखाई तेरे बस की नहीं।"

एक महीने तक उसने किताब छुई तक नहीं। उसे लगने लगा कि शायद वो सच में नाकाबिल है। लेकिन ठीक उसी समय, शर्मा जी ने उसे अब्दुल कलाम की किताब "विंग्स ऑफ फायर" दी और कहा,

"बेटा, अगर एक बार गिरने से डरोगे, तो उड़ना कैसे सीखोगे?"

इस वाक्य ने उसके भीतर फिर से चिंगारी जलाई।

अनिरुद्ध ने दोबारा परीक्षा दी और इस बार अच्छे अंकों से पास हुआ। उसने अपने गाँव के बाहर शहर में आगे पढ़ाई करने का निश्चय किया, लेकिन पैसे की समस्या फिर सामने आ गई।

उसने छोटे-मोटे पार्ट-टाइम काम किए ,अख़बार बाँटना, होटल में बर्तन धोना, और स्टेशन पर किताबें बेचना।

पढ़ाई और कमाई, दोनों साथ करना आसान नहीं था, लेकिन अब उसके अंदर एक "कभी हार न मानने" की आदत बनी चुकी थी।

शहर में आकर उसने कंप्यूटर सीखा और अंग्रेज़ी में सुधार करना शुरू किया। पहले दिन जब उसने एक प्राइवेट कंपनी में इंटरव्यू दिया, तो उसके टूटी-फूटी अंग्रेज़ी पर इंटरव्यूअर ने हँसते हुए कहा,

"हम आपको नहीं रख सकते।"

उस दिन उसे समझ आया कि दुनिया मेहनत का उतना सम्मान नहीं करती, जितना नतीजों का।

लेकिन उसने ठाना की अगली बार मौका मिलने पर वही लोग उसके आत्मविश्वास पर भरोसा करेंगे।

दो साल बाद उसने एक बैंक में बतौर कस्टमर सर्विस असिस्टेंट जॉइन किया। उसकी मेहनत और ईमानदारी ने उसे जल्द ही प्रमोशन दिलवाया।

लेकिन सबसे बड़ी बात, उसने अपने गाँव लौटकर एक छोटा डिजिटल लर्निंग सेंटर खोला, जहाँ बच्चे मुफ्त में कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग कर सकते थे।

वह बच्चों को सिर्फ पढ़ाता नहीं था, बल्कि उन्हें यह भी सिखाता कि हारना और झुकना, दोनों में फर्क होता है।

"हारो, लेकिन सीखो; झुको, लेकिन टूटो मत।"

कई सालों बाद उसने सरकारी परीक्षा पास कर ली और बैंक के अधिकारी बन गए। अब उसकी मासिक सैलरी इतनी थी कि वह अपनी माँ को आरामदायक जीवन दे सके।

गाँव के लोग जो कभी उसका मज़ाक उड़ाते थे, अब अपने बच्चों को उसकी सलाह लेने भेजते थे।

जब उसकी जिंदगी स्थिर हुई, तो उसने आसपास के छोटे गाँवों में जाकर युवाओं को प्रेरित करने के लिए सेमिनार शुरू किए।

वह उनसे कहता -

"सपने देखने में कोई खर्चा नहीं होता, लेकिन सपनों को पूरा करने की कीमत मेहनत और धैर्य से चुकानी पड़ती है।"

एक दिन, उसी पुराने पंचायत भवन के सामने खड़ा होकर अनिरुद्ध ने बच्चों से कहा,

"जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तो मेरे पास सिर्फ दो चीज़ें थीं — भूख और जिद। भूख सफलता की, और जिद खुद को साबित करने की। अगर तुम भी यही दो चीज़ें अपने अंदर जगा लो, तो तुम्हें रोकने वाला कोई नहीं होगा।"

आज, उसकी कहानी सिर्फ गाँव नहीं, बल्कि सोशल मीडिया पर भी चर्चित थी। लोग उसे "मन के पंख वाला लड़का" कहते थे - जिसने खुद की ताक़त से उड़ान भरी।

यह कहानी हमें सिखाती है कि संसाधनों की कमी, गरीबी, और असफलता हमारी मंज़िल को नहीं रोक सकतीं, जब तक कि हम खुद अपने मन के पंख नहीं काटते।

जीवन में जीत उसी की होती है जो बार-बार गिरकर भी उठ खड़ा होता है।

# जगन्नाथ पुरी : एक अविस्मरणीय यात्रा

**लोकेश चावड़ा**
उप प्रबंधक
अंचल कार्यालय रायपुर

**जय श्री जगन्नाथ।**

इस लेख की शुरुआत मैं इसी भक्तिभाव से करना चाहता हूँ, ताकि भगवान जगन्नाथ की कृपा-दृष्टि इस लेख के सभी पाठकों तथा सम्पूर्ण संसार पर सदैव बनी रहे।जगन्नाथ पुरी की यात्रा केवल एक भ्रमण नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभव है। नीले समुद्र की लहरें और मंदिर के ऊपर लहराती ध्वजा एक अलग ही शांति का अहसास कराती हैं।

भगवान जगन्नाथ की सदा खुली रहने वाली विशाल गोल आँखें उनके ब्रह्माण्डव्यापी और शाश्वत साक्षी स्वरूप का प्रतीक हैं। वे कभी सोते नहीं, निरंतर अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। इन नेत्रों का गहन आध्यात्मिक एवं प्रतीकात्मक महत्व है।

ऐसा माना जाता है कि ये बड़ी गोल आँखें, जिन्हें पुरी में "चका डोल" (चक्र के समान नेत्र) कहा जाता है, सूर्य और चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि भगवान सब कुछ देखते हैं तथा अतीत, वर्तमान और भविष्य—तीनों से परिचित हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो भगवान जगन्नाथ की खुली आँखें यह दर्शाती हैं कि वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं, अपने भक्तों से कभी दूर नहीं होते और उनका प्रेम सदैव हम पर दृष्टि बनाए रखता है।

## मेरी पुरी यात्रा

25 जनवरी को मुझे चार धामों में से एक श्री जगन्नाथ धाम के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं 24 जनवरी को प्रातः 6 बजे रायपुर से अपने पूरे परिवार माताजी, पत्नी, पुत्र और पुत्री के साथ कार द्वारा पुरी की यात्रा पर निकला। लगभग 620 किलोमीटर की यात्रा तय करते हुए हम रात्रि 8:30 बजे अपने गंतव्य पुरी पहुँचे। जैसे ही हम कार से बाहर निकले हवा में समुद्र की नमी और अगरबत्तियों की हल्की खुशबू महसूस होने लगी। रास्ते में श्रद्धालुओं की भीड़ और 'जय जगन्नाथ' के जयकारे मन में उत्साह भर रहे थे।

जगन्नाथ मंदिर : अद्भुत रहस्य

मंदिर की भव्यता देखते ही बनती है। काले ग्रेनाइट से बना यह मंदिर वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है।

जगन्नाथ पुरी का यह भव्य मंदिर 12वीं शताब्दी में राजा अनंतवर्मन चोड़गंग देव द्वारा कलिंग स्थापत्य शैली में निर्मित कराया गया था। यह मंदिर लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है और इसकी ऊँचाई लगभग 214 फीट है। मंदिर के ऊपर लगा ध्वज हमेशा हवा की विपरीत दिशा में लहराता है, जो आज भी एक रहस्य है।

**दर्शन :** गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा की काष्ठ (लकड़ी) की प्रतिमाओं के दर्शन कर मन को असीम शांति मिली। इस मंदिर की सबसे अनोखी विशेषता यह है कि भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियाँ अन्य मंदिरों की तरह पत्थर या धातु की नहीं, बल्कि नीम की लकड़ी से निर्मित होती हैं। इन्हें एक अत्यंत गुप्त एवं विशिष्ट अनुष्ठान के माध्यम से लगभग 12 से 19 वर्षों के अंतराल में बदला जाता है, जिसे नवकलेवर कहा जाता है।

**महाप्रसाद :** मंदिर के 'आनंद बाजार' में मिट्टी के बर्तनों में पका हुआ महाप्रसाद ग्रहण करना इस यात्रा का सबसे तृप्तिदायक हिस्सा था। मंदिर से जुड़ा एक और रहस्य यह है कि यहाँ प्रतिदिन बनने वाले महाप्रसाद की मात्रा कभी कम नहीं पड़ती—चाहे 2,000 श्रद्धालु हों या 20,000।

## सुनहरी रेत और पुरी तट

शाम के समय मैं पुरी तट पहुँचा। यहाँ की लहरें काफी ऊँची और ऊर्जा से भरी हैं।

डूबते सूरज की लालिमा और समुद्र का गर्जन एक

जादुई माहौल बना देता है। किनारे पर मिलने वाले सीप के सामान और स्थानीय हस्तशिल्प की दुकानों ने मन मोह लिया।

### रथ यात्रा की भावपूर्ण कथा

जगन्नाथ जी की रथ यात्रा से जुड़ी एक अत्यंत मनोहारी लघुकथा प्रचलित है। कहा जाता है कि पुरी के राजा इंद्रद्युम्न और रानी गुंडिचा भगवान जगन्नाथ की प्रेमपूर्वक सेवा किया करते थे। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान ने उन्हें वर माँगने को कहा।

राजा ने यह वर माँगा कि उन्हें कोई संतान न हो, ताकि भविष्य में कोई मंदिर को अपनी निजी संपत्ति न समझे और भगवान की सेवा में कोई कमी न आए। वहीं रानी गुंडिचा ने संतान-प्राप्ति का वर माँगा, ताकि वृद्धावस्था में उन्हें सहारा मिल सके।

दोनों की दुविधा देखकर भगवान मुस्कराए और बोले—

"मैं, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा ही आपकी संतान हैं, और हम हर वर्ष नौ दिनों के लिए अपना मंदिर छोड़कर आपके घर निवास करने आएँगे।"

इसी भाव के साथ प्रतिवर्ष आषाढ़ मास (जून-जुलाई) में नौ दिनों तक भव्य रथ यात्रा का आयोजन होता है, जिसमें पूरा पुरी नगर उत्सव में डूब जाता है।

हर वर्ष भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के विशाल रथ विशेष लकड़ियों से नए सिरे से बनाए जाते हैं। कहा जाता है कि इन रथों के दर्शन मात्र से ही समस्त पापों का नाश हो जाता है। यह पुरी का सबसे बड़ा और भव्य उत्सव है।

भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा विशाल लकड़ी के रथों पर सवार होकर अपनी मौसी के घर (गुंडिचा मंदिर) जाते हैं। लाखों लोगों के साथ मिलकर रथ की रस्सी खींचना परम सौभाग्य माना जाता है। चारों ओर शंखों की ध्वनि और 'जय जगन्नाथ' के नारों से पूरा आकाश गूंज उठता है।

### चंदन यात्रा (गर्मियों के दौरान)

यह उत्सव 42 दिनों तक चलता है और अक्षय तृतीया से शुरू होता है।

भगवान की प्रतिमाओं को चंदन के लेप से ढका जाता है और उन्हें 'नरेन्द्र सरोवर' (तालाब) में नौका विहार कराया जाता है। तालाब के बीचों-बीच सजी हुई नावें और शाम की रोशनी एक स्वप्निल दृश्य पैदा करती है।

### स्नान पूर्णिमा

रथ यात्रा से कुछ दिन पहले यह विशेष अवसर आता है।

ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन भगवान को 108 कलशों के जल से स्नान कराया जाता है।स्नान के बाद भगवान 'हाथी वेश' (गजानन वेश) धारण करते हैं, जो भक्तों के बीच बहुत लोकप्रिय है।

### यात्रा के अन्य पवित्र स्थल

पुरी प्रवास के दौरान मैंने जगन्नाथ मंदिर के अतिरिक्त कई दर्शनीय स्थल भी देखे—

- कोणार्क का सूर्य मंदिर, जो अपनी अद्वितीय वास्तुकला और भौगोलिक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है पुरी से करीब 35 किमी दूर, पत्थरों पर उकेरी गई यह 'कविता' वाकई अविस्मरणीय है।
- चंद्रभागा समुद्र तट, जहाँ अत्यंत शांति और सुकून का अनुभव होता है
- भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, जिन्हें बारह ज्योतिर्लिंगों का राजा कहा जाता है और जो कलिंग शैली का अनुपम उदाहरण है

### समापन

पुरी की यह यात्रा मुझे आस्था, संस्कृति और प्रकृति के करीब ले गई। यहाँ की सादगी और लोगों की श्रद्धा देखकर यह महसूस हुआ कि क्यों इसे भारत के चार धामों में से एक माना जाता है। हमारी दो दिनों की यह यात्रा भगवान जगन्नाथ की कृपा से अत्यंत सुखद रही। पुरी धाम के लोग इतने सरल, सहयोगी और अपनत्व से भरे हैं कि हमें कहीं भी कोई असुविधा नहीं हुई।

मैं अपने सभी पाठकों से विनम्र निवेदन करता हूँ कि जीवन में एक बार अवश्य श्री जगन्नाथ जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करें।

जय श्री जगन्नाथ।

सियावर तिवारी
प्रबंधक
अमदी शाखा

# अमृता प्रीतम

## साहित्यकार परिचय

अमृता प्रीतम 20वीं सदी की प्रतिष्ठित पंजाबी कवियत्री और लेखिका हैं। उनकी प्रसिद्धि केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी है, जहाँ उनकी कई रचनाओं का भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। अमृता प्रीतम ने पंजाबी और हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य का सृजन किया, जिसमें कविता, कहानियाँ, उपन्यास, संस्मरण और आत्मकथा शामिल हैं।

वहीं उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में 100 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। अमृता प्रीतम को उनकी रचनाओं और साहित्य में योगदान के लिए कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है, जिनमें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' और 'पद्म श्री' प्रमुख हैं। क्या आप जानते हैं कि अमृता प्रीतम पहली महिला थीं जिन्हें वर्ष 1956 में अपने काव्य संग्रह "सुनेहदे" के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' मिला था? इसके साथ ही वह पहली पंजाबी महिला थीं जिन्हें भारत सरकार द्वारा वर्ष 1969 में 'पद्म श्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अमृता प्रीतम का जन्म पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गुजरांवाला में 31 अगस्त, 1919 को हुआ था। उनके पिता का नाम 'करतार सिंह' और माता का नाम 'राज बीबी' था। अमृता प्रीतम का बचपन लाहौर में बीता और यहीं उनकी औपचारिक शिक्षा भी पूरी हुई। इसके बाद उनकी मात्र 6 वर्ष की अल्प आयु में सगाई हो गई, और 11 वर्ष की आयु में उनकी माता राज बीबी का निधन हो गया। इसके बाद पूरे घर की जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई।

क्या आप जानते हैं कि अमृता प्रीतम साहित्य जगत की उन विरले साहित्यकारों में से एक हैं जिनकी मात्र 16 वर्ष की आयु में, यानी 1935 में, पहली किताब प्रकाशित हुई थी? वहीं, 16 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह लाहौर के कारोबारी 'प्रीतम सिंह' से हो गया। अमृता प्रीतम और प्रीतम सिंह की दो संतानें हुईं, लेकिन वर्ष 1960 में वे दोनों एक दूसरे से अलग हो गए। इसके बावजूद, अमृता के नाम के साथ पति का नाम 'प्रीतम' हमेशा के लिए जुड़ गया, जिसे उन्होंने कभी नहीं बदला।

1947 के भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय अमृता प्रीतम लाहौर से देहरादून आ गईं। उनके शुरुआती दिन देहरादून में बीते, फिर वह कुछ समय बाद दिल्ली आ गईं। यहाँ अमृता प्रीतम ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली केंद्र से जुड़ गईं। विभाजन का उनपर बहुत गहरा असर पड़ा। उन्होंने मुल्क के बटवारे के समय विस्थापन का दर्द, दंगे, हत्याएं देखे थे। इस दर्दनाक मंजर को देखने के बाद उन्होंने अपनी कविता **'अज्ज अक्खां वारिस शाह नूं" लिखी'**, जो दोनों ही मुल्कों में रहने वाले लोगों का दर्द बयां करती है। इस कविता ने अमृता प्रीतम को भारत और पाकिस्तान में लोकप्रिय बना दिया था।

अमृता प्रीतम अपने एक साक्षात्कार में बताती हैं, "एक बार मेरे मित्र पाकिस्तान से आए और मेरे सामने थोड़े केले रख दिए, और कहा कि ये केले मेरी तरफ से नहीं हैं। मैं आ रहा था, तो एक केले बेचने वाला भागता हुआ मेरे पास आया और मुझसे कहने लगा, 'तुम दिल्ली जा रहे हो?' तो मैंने कहा, 'हाँ।' फिर उसने पूछा, 'तुम अमृता से मिलोगे?' मैंने हाँ में जवाब दिया। फिर उस केले वाले ने कहा कि जिसने 'वारिस शाह नूं' नज़्म कही थी। फिर मेरी तरफ़ से उसे ये केले दे देना, मैं बस यही दे सकता हूँ। मैं समझूंगा कि मेरा आधा हज हो जाएगा।

उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'पिंजर' पर एक फिल्म भी बन चुकी है, जिसमें भारत-पाकिस्तान के बटवारें के समय 'पूरो' नामक एक हिंदू लड़की की कहानी प्रस्तुत की गई है, जो बंटवारे के दौरान पंजाब में हुए धार्मिक तनाव और दंगों की चपेट में आ जाती है। इसके अलावा, अमृता प्रीतम के कई अन्य उपन्यासों पर भी फिल्में बनाई जा चुकी हैं।

अपनी अस्तित्वपरक नियति और सामाजिक पीड़न के खिलाफ़ स्त्री की चीख आपकी कविताओं में विभिन्न रूपों में दुर्लभ संवेदना और जीवंतता के साथ उभर कर आई है। सुनेहुड़े आपकी पूर्ववर्ती कविताओं से अलग है। इसमें लेखिका के सृजनात्मक अनुभव में एक उल्लास भरे मौसम का आगमन और विचार एवं अभिव्यक्ति की जटिलता दिखाई पड़ती है। ये कविताएँ, जो प्रेम की ऐन्द्रिक अभिव्यक्ति हैं, 'धरती से अपना संपर्क खोए बगैर एक अलौकिक आभा' विकरित करती हैं। जीवन एक पूर्ण परिपक्व फल में 'विकसित होता है' जो अपनी परिपक्वता में गिरने के लिए तैयार है; और सौन्दर्य, जो अपनी स्वयं की दौलत को वहन पर पाने में असमर्थ है, 'उपयोग में लाए जाने के लिए वेदना विहल होता है।' प्रेम का कोमल और मधुर अनुभव लौकिक और अनुर्वर पर अधिकार कर लेता है। जो कुछ भी सामाजिक-राजनीतिक अर्थवत्ता इन कविताओं में है, वह सर्जनात्मक अभिप्रायों और रूपकों के साथ स्पंदित होती हैं। ये अमृता प्रीतम की कुछ उत्कृष्ट और अननुवादनीय. कविताओं में से हैं। कस्तूरी (1959) और नागमणि (1964) जैसे उनके परवर्ती संग्रहों की कविताओं में 'जीवन की उच्चतर संभावनाओं के लिए प्रयास' दिखाई पडता है। काग़ज़ ते कैनवास की कविताएँ 'तेज़ी से अमानवीकृत हो रहे युग' के परिप्रेक्ष्य में एक अनुभवातीत विश्वदृष्टि प्राप्त कर लेती हैं। 'गर्भवती' जैसी कविताएँ सुकुमार मनोभावों के साथ लेखन की सहज प्रविधियों से भलीभाँति सम्मिश्रित हैं। अपने 18 संकलनों के साथ एक कवि के रूप में अमृता प्रीतम का क़द अतुलनीय है। एक वरिष्ठ समालोचक के शब्दों में, "संभवतः किसी भी कवि के पास तारों, चंद्रमा, सूरज और आकाश की उतनी छवियाँ नहीं है जितनी अमृता प्रीतम ने अपने काव्य, सपनों और दृष्टि की कशीदाकारी पर बुनी हैं। आश्चर्य की बात नहीं कि अपनी एक अत्यंत सुंदर कविता में वह स्वयं को एक फुलकारी बुनती स्त्री के रूप में चित्रित करती हैं, प्रकाश की फुलकारी।" आलोक से फटी हुई फुलकारी को कभी कौन सिएगा? आसमान के गवाक्ष में सूर्य एक दीप जलाता है। लेकिन मेरे दिल की मुंडेर पर कभी कौन एक दिया जलाएगा? एक कथा लेखिका के रूप में भी अमृता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपने 31 उपन्यासों और 20 कहानी संग्रहों के साथ आप आधुनिक पंजाबी कथा साहित्य की दुनिया को अप्रतिम रूप से विस्तीर्ण करती हैं। अपने उपन्यासों में आप अपने अनुभव विश्व को परस्पर विरोधी चरित्रों, स्थितियों, दृष्टिकोणों, संरचनाओं और अनुभव पैटर्न के साथ एक व्यापक फलक पर चित्रित करती है। वे कृतियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक आनंदप्रद और प्रेरक पाठ बनी हुई हैं। ये उपन्यास अनूदित होकर सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं और आधुनिकताबाद की स्पष्ट पुकार को प्रसारित करने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। 'जलावतन' एक युवक की कहानी है जो अपनी उम्र के हिसाब से अधिक परिपक्व है और वह स्वयं को अपने ही लोगों के बीच अकेला पाता है तथा अपरिवर्तनीय रूप से त्रासदी में बहा ले जाया जाता है। इसे दैनिक जीवन के नितांत मूर्ख यथातथ्यवादियों के मध्य आदर्शवाद की अवश्यंभावी नियति के एक रूपक के रूप में देखा जा सकता है। 'उनिन्जा दिन' एक नियतिवादी मृत्यु आकांक्षा के बरक्श मानवीय विश्वास और प्रेम के

माध्यम से संभव पुनरुज्जीवन का प्रभावी अंकन है। कोरे काग़ज़, हरदत दा ज़िंदगीनामा आदि उनके कुछ उत्कृष्ट उपन्यास हैं। अमृता प्रीतम की कहानियाँ अपनी विशिष्ट गहराई और कलात्मक उत्कृष्टता के लिए उल्लेखनीय हैं। 'इक शेहर दे मौत', 'तीसरी औरत' और 'पंज वारेह लंबी सड़क' जैसी कहानियाँ तीव्र प्रभावक्षम और संक्षिप्त हैं और अपने में स्पंदनशील भावावेगों की एक पूरी दुनिया समेटे हुए हैं। आप एक बहुसर्जक कहानीकार हैं लेकिन आपके कवि और उपन्यासकार व्यक्तित्व ने इस क्षेत्र की उपलब्धियों को छुपा दिया है। गद्य की अन्य विद्याओं में आपकी लगभग 40 कृतियाँ प्रकाशित हैं जिसमें तीन आत्मकथात्मक हैं- रसीदी टिकट (1976), लाल धागे दा रिश्ता (1989) और हुजे दी मिट्टी। ये अद्वितीय कृतियाँ हैं। दो कृतियाँ आपके सपनों के बारे में है। आपने ओशो की कृतियों औरा सारा शगुफ़्ता के जीवन पर लिखा है। अफजाल तनशीफ की रचनाओं पर आपकी कृति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आप पंजाबी मासिक नागमणि की संपादक रही हैं। आपकी कृतियाँ विश्व की 34 भाषाओं में अनूदित हुई है। हिन्दी में आपकी सभी कृतियों के अनुवाद हुए हैं। अंग्रेज़ी में आपकी 14 कृतियाँ अनूदित हैं। यदि कोई उनकी चुनी हुई रचनाओं की सूची बनाना चाहे तो ये कृतियाँ सहज ही ध्यान में आएँगी- अमृता प्रीतम की श्रेष्ठ रचनाएँ, चुने हुए उपन्यास (8 उपन्यास), चुनी हुई कहानियाँ, चुनी हुई कविताएँ (सभी हिन्दी में), कच्चे रेशमकी लड़की (हिन्दी में चुनी हुई कहानियाँ) ये कलम ये काग़ज़ ये अक्षर (हिन्दी में चुनी हुई रचनाएँ), सलेक्टेड पोएक्स (अंग्रेज़ी में),ए स्लाइस ऑफ़ लाइफ़ , चोनवें पत्रे (पंजाबी में चुनी हुई रचनाएँ), मिट्टी दी जात (पंजाबी में 51 कहानियाँ) अमृता विशेष (गुजराती अनुवाद में चुनी हुई रचनाएँ), काग़ज़ ते कैनवाज़ (पंजाबी में संकलित कविताएँ।

आपके जीवन और कृतित्व पर चार फ़िल्में बनी हैं और आपके उपन्यासों एवं कहानियों पर आधारित दस फ़िल्में और टीवी धारावाहिक। अमृता प्रीतम ने निमंत्रण पर और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रतिनिधि के रूप में नेपाल, यूगोस्वालिया, हंगरी, रोमानिया, बल्गारिया, फ्रांस, नार्वे, रूस और तत्कालीन सोवियत संघ के कई गणराज्यों की यात्रा की है। 1956 में प्राप्त साहित्य अकादेमी पुरस्कार के अतिरिक्त आपको इंटरनेशनल वाप्तसरोव एवार्ड, बल्गारिया का साइरिज एंड मेथोडियस एवार्ड और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। आपको पद्मश्री तथा दिल्ली विश्वविद्यालय, जबलपुर विश्वविद्यालय, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पंजाब विश्वविद्यालय, बंबई विश्वविद्यालय, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता द्वारा डी.लि. की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है। फ्रांसीसी सरकार द्वारा आपको 'ऑफिसर दें आर्डर दे आर्ट्स ए दे लेटर्स' की उपाधि प्रदान की गई। आपको छह वर्षों के लिए राज्यसभा सांसद नामित किया गया और वर्ष 2004 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। भारतीय साहित्य के इस अनूठे एवं करिश्माई साहित्यिक व्यक्तित्व, पंजाब की जीवित किंवदंती, अमृता प्रीतम को अपना सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है।

अमृता प्रीतम ने लंबी बीमारी के बाद 31 अक्टूबर 2005 को 86 वर्ष की आयु में इस दुनिया को अलविदा कह दिया था। उन्होंने अपनी आखिरी नज़्म **'मैं तुम्हें फिर मिलूंगी'** लिखी थी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। उनकी रचनाएँ हमेशा हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी और वे साहित्य जगत में सदा जीवित रहेंगी।

# एयरपोर्ट के भीतर

**भारती महानता**
वरिष्ठ प्रबंधक विधि
मंडल कार्यालय रांची

दुनिया में 2 तरह के लोग होते हैं। एक, जो हमेशा ही शालीनता से पेश आते हैं। दूसरे, जो एयरपोर्ट पर जा कर शालीन बन जाते हैं। एयरपोर्ट का वातावरण ही कुछ ऐसा होता है कि आप न चाह कर भी सभ्य बन जाते हैं। हम अपने स्वाभाविक व्यवहार पर अतिरिक्त विनम्रता का आवरण ओढ़ लेते हैं।

एक माता पिता अपने बच्चे को एयरपोर्ट पर खुल कर डांट नहीं सकते। घर पर वही बच्चा शरारत करने पर पिताजी के मुंह से जो अमृत वचन सुनता है, वो ही कमबख्त एयरपोर्ट पर बदमाशी कर के साफ बच निकलता है। बहुत हुआ तो पिताजी धीरे से अंग्रेजी में 'नो... नो' ही बोल पाएंगे, पर घर में देसी भाषा में तूतड़ाक सुनने वाले बच्चे को भला इस से क्या फर्क पड़ने वाला है। बच्चा अपनी मस्ती में मशगूल है।

ऐसे ही अकसर गुस्से में रहने वाले एक सज्जन एयरपोर्ट पंहुचे। कैब से उतरते ही ड्राइवर से भिड़ गए। गाड़ी मे बैठने से पहले जितना उन का अनुमानित बिल बता रहा था, एयरपोर्ट आने पर वह 10 रुपए बढ़ गया। बात 10 रुपए की भी नहीं, उसूलों की थी। इसलिए साहब ने ड्राइवर को खूब खरीखोटी सुना कर बिल का भुगतान किया।

एयरपोर्ट पर घुसने से पहले उन्होंने अपना मूड ठीक किया और भीतर जाते ही सब से मुस्कुरा कर बातें करने लगे। कोई कह ही नहीं सकता था कि ये वही सज्जन हैं, जो अभी पांच मिनट पहले कैब ड्राइवर के पूरे खानदान को भलाबुरा बोल रहे थे। व्यवहार में इस प्रकार के क्रांतिकारी बदलाव एयरपोर्ट पर एक सामान्य घटना है।

एयरपोर्ट पर आप अन्य यत्रियो से यों ही किसी भी विषय पर मुंह उठा कर चर्चा नहीं कर सकते। पान की दुकान की तरह यहां मौसम का हाल बता कर भी वार्तालाप प्रारंभ नहीं होता। यहां पर आप सिर्फ बुद्धिजीवियों वाले विषयों पर ही बातें कर सकते हैं। मसलन, यदि आप घरेलू विमान के यात्री हैं तो भारत की आर्थिक चुनौतियों पर चर्चा कर सकते हैं। वहीं यदि आप अंतर्राष्ट्रीय यात्रा कर रहे हैं तो वैश्विक चुनौतियों पर आंसू बहा सकते हैं।

यह शोध का विषय हो सकता है कि एयरपोर्ट पर खानेपीने की सामग्री के भाव इतने बढ़े हुए क्यों होते हैं। खाद्य पदार्थों के दाम सुन कर आप खुद को गरीबी रेखा के नीचे महसूस करते हैं। यदि आप एयरपोर्ट पर खाद्य पदार्थ खरीद पा रहे हैं अथवा चाय भी पी रहे हैं, तो आप को नैतिकता के आधार पर निश्चित ही एलपीजी सब्सिडी छोड़ देनी चाहिए। वास्तव में एयरपोर्ट ही एक ऐसी जगह है, जहां एक मिडिल क्लास वाला भी गरीबी का अनुभव कर सकता है।

एयरपोर्ट और विमान यात्रा के दौरान केवल एक समय ऐसा आता है, जब हम सारा दिखावटी आवरण त्याग कर अपने स्वाभाविक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। जब विमान रनवे पर उतरता है और सीट बेल्ट खोलने का संकेत होता है, सभी यात्री अपने-अपने बैग उठा कर पोजीशन ले लेते हैं। सब जानते हैं कि अभी विमान के द्वार खुलने में वक्त है, पर फिर भी कोई भी विमान के भीतर अपने 2 मिनट भी खराब नहीं करना चाहता। भले ही बाहर निकल कर बैगेज के लिए 10 मिनट रुकना पड़े।

विमान से निकलने की यही अधीरता हमारी अनेकता में एकता को दर्शाती है। यह नजारा कुछ ऐसा होता है कि हमारा शरीर भले ही विमान में हो, पर दिल हमारा अब भी राज्य परिवहन निगम की बस में होता है।

# माँ की ममता

आशुतोष पाणिग्रही
उप प्रबंधक
बहू बाज़ार, रांची

दीनापुर नाम का एक खूबसूरत गांव एक छोटी सी नदी के किनारे था। वहां विकास नाम का एक लड़का अपनी मां गंगा के साथ रहता था। जब वह छोटा था तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई थी। विकास अब पांच साल का हो गया है और स्कुल जाने लगा है। एक सुबह गंगा बोलती है... "बेटा जल्दी से नाश्ता कर लो स्कूल के लिए देर रही है, मुझे भी बहुत काम करना है।"

विकास ने जवाब दिया – "ऐसे नहीं माँ, मैं ऐसे नहीं खाऊंगा मुझे रुखी रोटी अच्छी नहीं लगती, मैं तो दूध के साथ खाऊंगा, मुझे दूध भी चाहिए"।

मां बोली, "बेटा दूध हमारे घर में कहाँ से आएगा" (विकास के जिद करने पर कहती है) "अच्छा पड़ोस में लाला के यहां देखती हूं, उसने गाय रखा है"। वह लाला यहां जाती है और कहती है "मेरा लड़का बिना दूध के खाना नहीं खाता, मुझे रोज सुबह एक गिलास दूध दे दिया करो लाला"।

लाला दयालु आदमी था बोला – "ठीक है, लेकिन तू पैसे कहाँ से देगी, एक काम करना, इसके बदले में हमारे घर के काम कर दिया करना। दया की मां बीमार है और हम झाड़ू-बर्तन करने के लिए बाई की तलाश कर रहे हैं तो ऐसा करो तुम मेरे घर में झाड़ू-बर्तन कर देना और उसके बदले में मैं तुम्हें दूध दे दिया करूँगा और कुछ पैसे भी दूंगा।"

गंगा लाला के यहाँ काम करने के अलावा खेतों में मजदूरी भी करती थी। इस प्रकार गंगा और विकास का जीवन चल पड़ा। विकास को अच्छा खिलाने और अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए गंगा दिन-रात मेहनत करती, जिसके कारण वह बीमार रहने लगी और कमजोर भी हो गई थी। विकास अपने माँ की हालत को देखता और बोलता... "तुम कितनी कमजोर हो गई माँ, जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तब मैं तुम्हें कुछ भी काम नहीं करने दूंगा।"

धीरे-धीरे विकास बड़ा होता जाता है। बड़ा होने पर उसकी शहर में अच्छी नौकरी लग जाती है और वह बैंक में अधिकारी बन जाता है। कुछ दिन बाद विकास शादी हो जाती है और वह अपनी माँ और बहू सीमा के साथ शहर में ही रहने लगता है। धीरे-धीरे सीमा अपने पति को अपने वश में कर लेती है और गंगा का जीना हराम कर देती है। वह उस पर बहुत उल्टा-सीधा आरोप लगा कर विकास के कान भरती रहती है। वह विकास से कहती है... "मैं माँ जी को कितना समझती हूँ कि अच्छे कपड़े पहना करो, थोड़ा अच्छा रख-रखाव करो, आखिर आप एक बैंकर की है, उनसे मिलने उनके दोस्त-साथी आते रहते हैं, वे जाते-जाते कहते हैं ये आपकी नौकरानी है क्या ? माँ जी जानबूझ कर हमारी बदनामी कराती हैं।"

विकास – "हाँ ! तुम ठीक कह रही हो, लेकिन उपाय क्या है ?

सीमा – "गाँव में अपना घर है, क्यों नहीं माँ जी को वही छोड़ आते हैं, उनके रहने खाने के लिए कुछ पैसे हर महीने भेज दिया करेंगे।"

विकास – "तुम ठीक कह रही हो, मैं आज ही माँ से

बात करता हूँ, कल छुट्टी भी है, मैं उसे कल ही गाँव छोड़ आता हूँ।"

शाम को विकास ने माँ से बात की, माँ सब कुछ समझ गई। रोज-रोज की बहु के साथ बक-झक से वह भी छुट्टी पाना चाहती थी। शहर से गाँव जाना ही उसने उचित समझा। आगे का अंजाम भी उसे पता था। सुबह हुई विकास माँ को गाँव छोड़ आया। विकास और सीमा यहाँ ख़ुशी-ख़ुशी रहने लगे। उधर गावं में गंगा भी अपनी बची-खुची जिंदगी बिताने लगी। कुछ महीने तक तो विकास माँ को खर्च भेजता रहा, लेकिन सीमा की चालबाजी के कारण वह धीरे-धीरे माँ को भूलने लगा।

समय बीत रहा था कि अचानक विकास बीमार पड़ा। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने जांच किया तो पता चला कि विकास की दोनों किडनी ख़राब हो चुकी है, अगर जल्द किडनी नहीं बदला गया तो उसकी मौत हो सकती है। यह सुनकर विकास और सीमा के पैरों तले की जमीन खिसक गई। विकास और सीमा अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, परिचितों सबसे मदद के लिए कहते है। लेकिन, उसे कहीं से मदद नहीं मिलती न ही कोई दानकर्ता ही मिलता है। दोनों निराश हो चुके थे कि अचानक उन्हें पता चलता है कि एक दानकर्ता मिल गया है। ऑपरेशन सफल रहता है और विकास की जान बच जाती है। विकास और सीमा उस दानकर्ता से मिलना चाहते हैं, लेकिन वह दानकर्ता अस्पताल से जा चूका होता है। अस्पताल से छुट्टी पाकर विकास घर आ जाता है। घर आ कर सीमा विकास से कहती है – "देख लिया तुमने अपनी माँ का प्यार, दुनिया जहान के लोग तुम्हें देखने आये लेकिन, तुम्हारी माँ तुम्हें अभी तक देखने नहीं आई।" यह सब सुनकर विकास अपनी माँ से नफ़रत करने लग जाता है।

कुछ दिनों बाद विकास के पास गाँव से लाला का फोन आया। फोन पर लाला ने बताया कि उसके घर से बदबू आ रही है। शायद उसकी माँ मर गई है क्योंकि घर अन्दर से बंद है और वह चार-पांच दिनों से दिखाई नहीं दे रही है। विकास ने रूखे स्वर में कहा – "मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं इतना बीमार था लेकिन मेरी माँ मुझे देखने तक नहीं आई"। तभी लाला ने विकास को टोकते हुए कहा – "तुम्हें ऐसा कहते हुए शर्म आनी चाहिए विकास, तुम उस देवी के लिए ऐसे शब्द कर रहे हो जो तुम्हें जीवन दान दे गई। क्या तुम्हें मालूम है तुम्हारी का क्यों तुम्हें देखने नहीं गई, क्योंकि उसी ने तुम्हें किडनी दान किया है। उसने डॉक्टर से कह दिया था की विकास को यह पता नहीं चलाना चाहिए, नहीं तो वह मेरी कमजोर हालत जानकर मेरा किडनी लेने से मना कर देगा। मेरा क्या है मैं आज-कल में मरने वाली ही हूँ, बस मेरा बेटा बच जाना चाहिए। किडनी देने के बाद वह गाँव आ गई थी और उसी समय से बीमार रहने लगी थी"।

यह सब सुनकर विकास को जिससे करंट लगा हो। उसके आँखों से आंसू बहने लगा। अब विकास बहुत पछता रहा था और रोते हुए कर रहा था – "हे भगवान! ये मैंने कैसा अनर्थ किया जिस माँ ने अपना सुख नहीं देखा और मेरे लिए अपनी जिंदगी कुर्बान कर दी। उस माँ को अंतिम समय में अपने पास भी नहीं रख सका"।

विकास को अपने बचपन में माँ से कही बातें याद आ रही थी। वह अपनी माँ से कहा करता था कि जब वह बड़ा हो जायेगा तो, उसे एक काम नहीं करने देगा, उसे देवी की तरह पुजेगा। यह सुन कर उसकी माँ भी कहा करती थी – "जब तुम्हारी नौकरी लग जाएगी तो मैं रानी बन कर राज करुँगी"। ये बातें याद आते ही विकास और फफक कर रो पड़ा । सीमा उसके पास ही खड़ी थी बोली – "इतनी छोटी बात के लिए आंसू नहीं बहाते, अच्छा हुआ मुक्ति मिली। सीमा के मुंह से यह बाते सुनकर विकास आग-बबूला हो गया। फोन रखा और पलट कर एक जोरदार थप्पड़ सीमा के गाल पर जड़ते हुए एक ओर धक्का दिया और घर से बाहर निकला गाड़ी उठाई और अपने गाँव की ओर चल पड़ा। उसके मन में यही बातें चल रही थी कि उसने माँ के दूध का कर्ज नहीं चूका पाया और न ही माँ के प्रति अपना फर्ज ही ठीक से निभा पाया। मन ही मन वह अपनी माँ को याद करते हुए कह रहा था मुझे माफ़ कर देना माँ, अपने नालायक बेटे को माफ़ कर देना....

# खुद को प्रस्तुत करने का बेस्ट तरीका

सुश्री प्रीति मंडावी
अधिकारी
मंडल कार्यालय, रायपुर

इंटरव्यू फेस करने पर अलग अलग लोगों की कुछ अलग अलग प्रतिक्रियाएं होती हैं। कुछ लोगों को पसीना छूट जाता है, कुछ लोग सचमुच हकलाने लगते हैं। कुछ लोग महीनों में याद की गई तमाम बातें उस क्षण भूल जाते हैं, अच्छे-अच्छे वाचाल लोगों के मुंह से कई बार एक शब्द भी नहीं निकलता। जबकि कई लोग ऐसे भी होते हैं जो बड़ी सहजता से साक्षात्कारकर्ता का सामना करते हैं और कुछ तो ऐसे भी होते हैं जो आम समय पर भले अपने को स्मार्ट ढंग से पेश न कर पाएं, लेकिन साक्षात्कार देते समय पता नहीं कहां से स्मार्टनेस आ जाती है और वह शानदार साक्षात्कार देते हैं।

सवाल है आखिरकार साक्षात्कार के संबंध में इतनी सारी अलग अलग प्रतिक्रियाएं क्यों होती हैं? न्यूर्याक की पैमेला स्किलिंग्स इंटरव्यू को बेहतर तरीके से देने की कोचिंग देती हैं। उनके मुताबिक साक्षात्कार का सामना करना एक किस्म की कला है। यह कला बहुत कम लोगों में होती है। हालांकि पैमेला के मुताबिक इस कला को सीखा जा सकता है। दूसरे शब्दों में साक्षात्कार देते वक्त आत्मविश्वास से भरे होने की कला सीखी जा सकती है। साक्षात्कार देते समय किसी किस्म की दहशत में न आना, कूल बने रहना। ये तमाम कुशलताएं हम अभ्यास के जरिये सीख सकते हैं। ऐसा साक्षात्कार कला की कोचिंग देने वाली पैमेला स्किलिंग्स का मानना है।

क्या साक्षात्कार देने की कला न होने या न सीख पाने की वजह से हमें अपने जिंदगी में इसका नुकसान उठाना पड़ता है? इस सवाल का जवाब है बिल्कुल उठाना पड़ता है। पैमेला के पास ऐसे उदाहरणों की लंबी फेहरिस्त है, जो अच्छा इंटरव्यू न दे पाने की वजह से जिंदगीभर अपनी प्रतिभा और क्षमता से कम आंके गये या उन्हें अपनी क्षमता और प्रतिभा के बराबर सम्मान नहीं मिला। बहरहाल हम यहां ऐसे लोगों के बारे में नहीं जानना चाहते, इनके जिक्र का हमारा मकसद ये है कि हम कैसे साक्षात्कार देने की कला को सीखें, अपनी कमजोरियों से पार पाएं और हम जितने योग्य हैं, कम से कम अपनी योग्यता के बराबर का फल तो पाएं। सवाल है अच्छा साक्षात्कार देने के लिए क्या कला सीखनी होगी?

जैसा कि हमने शुरु में जिक्र किया कि ऐसे तमाम लोग हैं, जो वैसे तो चीजों के बहुत अच्छे जानकार थे, अपनी जानकारी को बहुत अच्छी तरीके से व्यक्त भी कर लेते थे, लेकिन साक्षात्कार के समय उनमें कंपकंपाहट शुरु हो गई, वो हंकलाने लगे। वे सहज शब्दों का भी अटपटा उच्चारण करने लगे। दरअसल यह सब उनके अंतर्मुखी होने की वजह से था। विशेषज्ञ कहते हैं इन कमियों से छुटकारा पाया जा सकता है। पर सवाल है कैसे? पैमेला ने अपने एक क्लाइंट को सुझाव दिया कि वे सवालों के जवाब पर काम करें। उन्होंने अपने क्लाइंट को बोलने की स्टाइल के बारे में बताया और यह आत्मविश्वास भरा कि अगर अपनी बात शुरु करने के पहले एक दो जुमले में आप हंकला भी जाते हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप फोकस्ड रहें, आप तुरंत ट्रैक पर लौट सकते हैं और अच्छे जवाब देना शुरु कर सकते हैं।

दरअसल साक्षात्कार एक किस्म से अपने आपको

बेचने की कला है, अपने आपको बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने का कौशल है। यह तभी संभव है, जब आप अपने आपका सम्मान करें। अपने अंदर यह भावना रखें कि आप भी कुछ हैं। ईमानदारी से चीजों को जानें, पढ़ें, समझें और फिर अपनी समझदारी पर यकीन करें। साथ ही यह भी मानें कि किसी भी सवाल का कोई एक रटारटाया जवाब नहीं हो सकता। अगर आप चीजों को जानते हैं तो आप उन चीजों को कई तरह से प्रस्तुत कर सकते हैं, वह प्रस्तुति आपकी मौलिक होगी। इसलिए साक्षात्कार के समय किसी सवाल का रटारटाया जवाब न याद करें। इंटरव्यू देते समय सवाल पूछने वाले के चेहरे पर नजर मिलाकर आत्मविश्वास से देखें, होंठों से फूट रहे उसके शब्दों की बॉडी लैंग्वेज समझें और बजाय सवाल के जवाब देने के पहले एक क्षण को यह सोचें कि आखिर यह बंदा जानना क्या चाहता है?

जब आप सवाल को अच्छे ढंग से सुनेंगे तो वह सवाल सिर्फ ध्वनि का एक टुकड़ा नहीं होगा, आपके सामने उसका चित्र बन जायेगा और वह चित्र विस्तार से आपको बता रहा होगा कि ये सवाल आपसे जानना क्या चाहता है? लब्बोलुआब यह कि अगर आप साक्षात्कार देते समय इंटरव्यूर के सवाल को अच्छी तरह से सुनते हैं। उसकी आंखों में आंखें डालकर उसकी बॉडी लैंग्वेज को समझते हैं तो अगर आप वाकई उस सवाल के बारे में जानते हैं तो तुरंत अपनी जानकारी तक पहुंच जाएंगे और उसके अपने तरीके से व्यक्त कर देंगे। अगर आपको लगता है कि आपने जो सवाल सुना है, उसमें कुछ कंफ्यूजन है, तो बिना इस बात की चिंता किये हुए कि इसका कोई नकारात्मक असर पड़ेगा। आप बड़ी सहजता से कहिये सॉरी, मैं सवाल नहीं समझ सका, कृपया इसे दोहरा दें और साक्षात्कारकर्ता के सवाल दोहराते समय अपना अधिकतम फोकस सवाल को समझने में लगाएं। आपको निश्चित रूप से कोई जवाब सूझ जायेगा। यहां तक कि अगर सवाल का जवाब आपने नहीं भी पढ़ा होगा तो सवाल अच्छे से सुनने पर, तो आपको कुछ न कुछ जवाब सूझ ही जायेगा। कहने का मतलब ये है कि आप हंकलाएंगे नहीं और साक्षात्कार अच्छा हो जायेगा।

# हिन्दी : भारत की आत्मा

**हिन्दी है भारत की आत्मा,**
**हर शब्द में इसकी गरिमा।**
**वीरों की गाथा कहती है,**
**बलिदानों की अमर कहानी बहती है।**

**जब तिरंगा लहराता है नभ में,**
**हिन्दी गूंजती है हर जबाँ में।**
**यह भाषा नहीं, यह भावना है,**
**भारत माँ की आराधना है।**

**झाँसी की रानी की हुंकार में,**
**भगत सिंह के विचार में,**
**गांधी के सत्य के मार्ग में,**
**हिन्दी है हर संघर्ष के सार में।**

**यह खेतों की हरियाली है,**
**यह सैनिक की रखवाली है।**
**हिन्दी में है वो जोश, वो जज़्बा,**
**जो बनाता है भारत को अनुपम और अद्भुत।**

**हिन्दी दिवस पर लें ये संकल्प,**
**न हो कभी इसका कोई विकल्प।**
**जहाँ भी जाएं, हिन्दी को अपनाएं,**
**भारत की शान को और बढ़ाएं।**

**राहुल शर्मा**
वरिष्ठ प्रबन्धक
अंचल कार्यालय, रायपुर

धर्मेंद्र दास
वरिष्ठ प्रबन्धक विधि
अंचल कार्यालय रायपुर

# पुस्तकें हमारी जीवन रक्षक है

काफी सारे लोग मानते हैं कि किताबें पढ़ने की तुलना में इंटरनेट के ज़्यादा फ़ायदे हैं, उनका मानना है कि इंटरनेट बहुत तेज़ है, सच है, इंटरनेट तेज़ है, और इंटरनेट की शक्ति को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन किताबें धीमी प्रक्रिया हैं क्योंकि वे अपने उपयोगकर्ताओं और पाठकों को आंतरिककरण, प्रतिक्रिया और परिवर्तन की अनुमति देती हैं। किताबें वास्तव में इंटरनेट पर स्रोतों की तुलना में अधिक विश्वसनीय हैं क्योंकि प्रकाशन से पहले उनकी समीक्षा की गई होती है। किताबों की जानकारी लंबे समय तक रहती है जबकि आपके पास इंटरनेट पर हर घंटे बदलती जानकारी हो सकती है ।

किताबें अधिक विश्वसनीय साबित हुई हैं लेकिन इंटरनेट पारंपरिक है। आप वास्तव में जानते हैं कि किताबों में स्रोत इंटरनेट पर उससे ज़्यादा वैध है। इंटरनेट में इतनी जानकारी है, कभी भी कुछ भी पोस्ट किया जा सकता है और आपको पता नहीं होता कि यह ईमानदार है, सच है या झूठ। इंटरनेट खुद किताबों से आया है। आप सीख सकते हैं कि किताबें क्यों महत्वपूर्ण हैं। इंटरनेट ने किताबों की शक्ति को समझा है, जो आजकल डिजिटल किताबें इंटरनेट पर बेची जा रही हैं, कई वेब पेज और ऐप हैं जो किताबें, मुद्रित, डिजिटल, सभी प्रारूप में बेचते हैं।

पुस्तकें किसी एक विषय से संबंधित जानकारी का भण्डार होती हैं, वे व्यापक, विशिष्ट और पूर्ण होती हैं, सभी आवश्यक जानकारी उनमें संग्रहित होती हैं, पुस्तकें हमें भ्रमित नहीं करतीं, वे आगे कहां जाना है, यह तय करने में हमारी मस्तिष्क ऊर्जा को कभी बर्बाद नहीं करतीं, प्रत्येक पृष्ठ को आगे पलटने से वह निर्णय हमारे लिए हो जाता है, जिससे हमारी सारी ऊर्जा सीखने के लिए सुरक्षित हो जाती है।

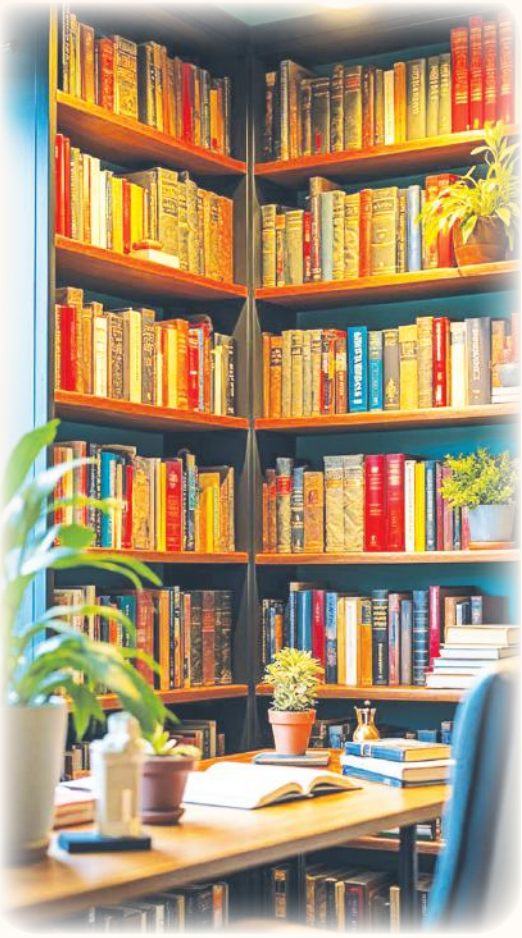

पढ़ना हमें बुद्धिमान और उत्साहित महसूस कराता है, पढ़ना अधिक आरामदायक और अधिक कल्पनाशील है, जब हम कोई किताब पढ़ते हैं तो हम उसमें डूब जाते हैं, हमारा मस्तिष्क काम करना शुरू कर देता है, हमारी कल्पना को पंख लग जाते हैं, कल्पना में वह शक्ति होती है जो आपको वह बना सकती है जो आप हमेशा चाहते हैं, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि इंटरनेट का कोई मूल्य नहीं है या यह उपयोगी नहीं है, इंटरनेट

बहुत मूल्यवान और उपयोगी है, हम इंटरनेट से भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, हम दोनों तरह से जानकारी, ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन यह हम पर है कि हमें किस जानकारी और ज्ञान पर अधिक भरोसा करना चाहिए, इंटरनेट एक ही विषय से संबंधित कई विकल्प दिखाता है, लेकिन किताब एकल-विषय पर आधारित होती है और किताब में आमतौर पर आपके हित से संबंधित सभी ज्ञान, जानकारी होती है, इसलिए अंत में यह आपकी पसंद और निर्णय है कि आप या तो इंटरनेट पर भरोसा करें या दोनों जानकारी, ज्ञान और बुद्धिमता की तुलना करें और फिर किसी निष्कर्ष पर पहुँचें। किताबों में एकल विषय की जानकारी है जबकि इंटरनेट आपको 100,000 उत्तरों के साथ वापस ला सकता है, लेकिन एक किताब पढ़ना आपको सही उत्तर वापस ला सकता है, जैसा कि मैंने ऊपर कहा कि किताबें एकल विषय की जानकारी हैं, आपको इसके भीतर अपने प्रश्न से संबंधित सभी जानकारी और ज्ञान मिलेगा। किताबें अधिक आराम देती हैं, यह अवसाद को कम करती है, यह तनाव चिंता को कम करती है, यह आपको कल्पनाशील दुनिया में ले जाती है, यह आपके दिमाग और शरीर को आसान बनाती है, एक महान कहानी में खुद को खोना तनाव के लिए सही उपाय हो सकता है ।

किताबें एक धीमी प्रक्रिया है क्योंकि यह उनके उपयोगकर्ताओं और पाठकों को आंतरिक करने, प्रतिक्रिया करने और परिवर्तन करने की अनुमति देती हैं । एक किताब में वर्णित आजीवन सिद्धांत पाठकों को प्रेरित करते हैं, उन्हें नया रास्ता और नया परिप्रेक्ष्य देते हैं, उन्हें दुनिया को अधिक सकारात्मक तरीके से देखते हैं, उन्हें दुनिया को अलग-अलग परिप्रेक्ष्य से देखते हैं, उन्हें जीवन की वास्तविक खुशी और वास्तविकता को समझते हैं, उन्हें अधिक जिम्मेदार बनाते हैं ।

किताबें अपने पाठकों के बीच प्रेरणा और सकारात्मकता फैलाती हैं, यह ज्ञान साझा करती है जो पाठक को दुनिया को एक नए तरीके से देखने की अनुमति देती है, यह उनकी समस्याओं का समाधान देकर मानसिक दबाव को कम करती है, किताबों में आमतौर पर झूठे तथ्य, तर्क या जानकारी नहीं होती है, किताबें प्रकाशित होने से पहले पूरी तरह से जाँच से गुजरती हैं, इंटरनेट में नकली तथ्यों की संभावना है, इंटरनेट पॉप-अप और लिंक द्वारा उपयोगकर्ताओं को विचलित करता है, और इंटरनेट पर कई पृष्ठ हैं जो व्यभिचार वीडियो साझा करते हैं, जो आमतौर पर उपयोगकर्ताओं का ध्यान और फ़ोकस विचलित करते हैं, लेकिन किताबों के साथ ऐसा नहीं है, किताबें एकल-आधारित विषय हैं, उनमें पॉप-अप नहीं होते हैं और उन चीजों को साझा नहीं करते हैं जो आवश्यक नहीं हैं। किताबों के माध्यम से हम गुरुओं से सीखते हैं, हम उन लोगों से सीखते हैं जिन्होंने उसी समस्या का सामना किया था जिसका हम अभी सामना कर रहे हैं ।

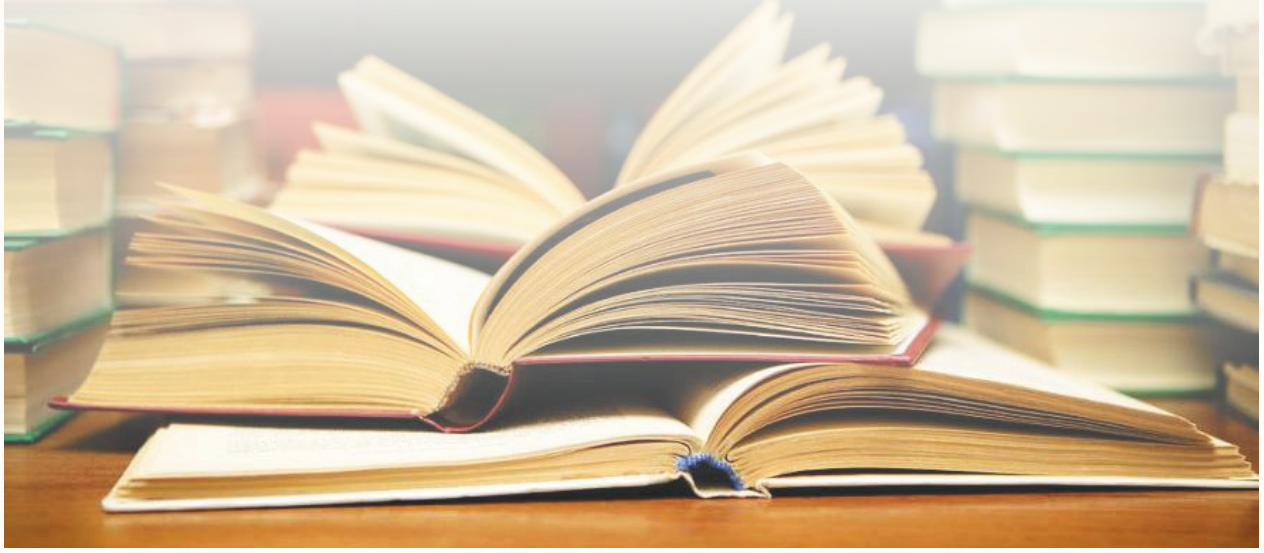

# मेरा पहला गांव, मेरी पहली पोस्टिंग : ग्रामीण बैंकिंग की अमिट यादें

कमल किशोर झा
मुख्य प्रबंधक
मंडल कार्यालय : बिलासपुर

## सपनों का पहला कदम

मेरी बैंकिंग यात्रा की शुरुआत एक ऐसे सपने से हुई, जिसकी कल्पना भी न की थी। सालों की मेहनत, प्रतियोगी परीक्षा की रात-दिन पढ़ाई, और आखिरकार सफलता। जब पहली पोस्टिंग का लिफाफा खोला, तो पश्चिम बंगाल के एक सुदूर गांव का नाम था। उत्साह के साथ चिंता भी हुई - शहरों में पली-बढ़ी नजरों ने कभी ग्रामीण भारत को इतने करीब से न देखा था। लेकिन जो सफर शुरू हुआ, वो जीवन भर की अमिट यादें बन गया। आइए, उस पहली पोस्टिंग की पूरी कहानी सुनें - यह मिट्टी के घरों, गड्ढे भरे रास्तों, ग्राहकों के प्यार और सेवा की संतुष्टि से भरी है।

## गांव की सादगी और दैनिक संघर्ष

वह गांव इतना सादा था कि रहने लायक जगह ही न थी। सारे घर मिट्टी के थे - बारिश में लिपटते, धूप में सूखते। कोई पक्का निर्माण नहीं था, बिजली नाममात्र की और पानी के लिए पुकुर (तालाब को बंगला में पुकुर कहते हैं) । शाखा के सभी स्टाफ सदस्यों को पास के शहर में रहना पड़ता, लगभग 20 किलोमीटर दूर था ।

रोजाना की बस यात्रा तो जैसे एडवेंचर ! सुबह 8 बजे शहर से बस पकड़ते। रास्ते की हालत? गड्ढे इतने गहरे कि लगता, गड्ढों में रास्ता छिपा है। मानसून में तो पानी भर जाता, बसें फंस जातीं। बसें पुरानी, कहीं न कहीं रिजेक्ट होकर आतीं - क्योंकि नई बसें इस रास्ते पर टिक ही न पातीं, इंजन बैठ जाता। कैपेसिटी से तीन गुना सवारियां - लोग ऊपर-नीचे लटकते, मुर्गियां-अनाज के थैले।

लेकिन ग्रामीणों का प्यार! भीड़ में भी हमें देखते ही सीट छोड़ देते। "साहब, बैठिए!" बस का टाइम हो जाए तो कंडक्टर खुद हमारे शाखा आता: "साहब जी, चलिए! ये लास्ट बस है। रात हो गई तो सुनसान इलाका, दिक्कत होगी।" कभी काम बाकी रहता तो ब्रांच देर तक खुली रहती। ये छोटी-छोटी बातें ही दिल जीत लेतीं। वह 20 किमी0 का सफर कभी बोरिंग न लगा - रास्ते में चाय की टपरी, खेतों की हरियाली, और ग्रामीणों की मुस्कान और सफर के दौरान उनके किस्से।

## ब्रांच की भव्य भीड़ और स्मार्ट तरकीबें

ब्रांच फर्स्ट फ्लोर पर, सकड़ी-सी तंग सीढ़ियां। सुबह 9:30 बजे पहुंचते, गेट खोलते तो नजारा: सीढ़ियां नीचे से ऊपर तक ठसाठस ग्राहकों से भरी! महिलाएं, किसान, बच्चे - सब चिल्लाते: "हमारा नंबर पहले है साहब!" हम हंसते: "अरे भाई-बहन, हम स्टाफ हैं। पहले हमें जाना है, तभी आपका काम होगा।" सब हंस पड़ते, रास्ता दे देते। ये रोज का तमाशा था, लेकिन प्यार भरा।

भीड़ का सबसे बड़ा राज? ओल्ड एज पेंशन और विडो

पेंशन वाली महिलाएं। गांव में साक्षरता कम, ज्यादातर अंगूठा लगाकर पैसे लेतीं - सिग्नेचर न आता। पैर रखने की जगह न। काउंटर पर खड़े हों तो धक्के। नाम पुकारो: "राधा देवी!" तो चार राधा देवियां एक साथ: "मेरा है साहब! मेरा!" कन्फ्यूजन! गलत पेंशन चली जाती।

हमने तरकीब लगाई: पासबुक में फोटो लगाना शुरू किया। नाम के साथ गांव जोड़ा जैसे कि "राधा देवी, फलाना गांव!" अब सही पेंशन सही हाथ! महिलाएं खुश: "वाह साहब, स्मार्ट!"

ये यादगार पल आज भी हंसाते हैं। कभी-कभी बच्चे नाम गिनाते: "मां का नंबर 5वां!" ग्रामीण जीवन का अद्भुत चित्र अभी थे मेरे अंतर्मन में लम्हा उभर आतीं हैं।

## लोन का पहाड़ और स्वयं सहायता समूहों की सफलता

पहले दिन सीट पर बैठा तो लोन फाइलों का पहाड़—आंखों के ऊपर! पिछले 6 महीने से ब्रांच अधर में, अधिकारी ट्रांसफर। ग्रामीण घेर लिए: "किसान क्रेडिट कार्ड!", "ट्रैक्टर लोन साहब!" " स्वयं सहायता समूहों का काम!" मैं नया था, बैंकिंग बारीकियां सीख रहा था। सीनियर्स से मदद ली, किताबें पढ़ीं, रात-दिन मेहनत। धीरे-धीरे सब डिस्पोज किया।

वहां 80% लोन स्वयं सहायता समूहों के थे। यह ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने वाली एक क्रांतिकारी योजना है। वे रेशम के महीन धागे बुनतीं, साड़ी-शॉल बनातीं, छोटे कारोबार चलातीं। मैं गांवों में पैदल गया - कच्चे रास्ते, मिट्टी के घर - आंगन होते थे । ग्रामीणों के घरों में चाय पी, कहानियां सुनी। एक महिला बोली: "लोन से हम पैरों पर खड़ी हुईं। पहले सूदखोर लूटते, अब बैंक का सहारा।" उनका उत्साह देख मजा आने लगा। फाइनेंशियल इंक्लूजन का असली स्वाद - महिलाओं की तरक्की में योगदान। सैकड़ों स्वयं सहायता समूह सफल हुआ थे, गांव बदलने लगा था !

## अपार प्यार और छोटी-छोटी खुशियां

शहर के मकान मालिक के घर से खाना आता - हम मासिक बिल चुकाते थे । लेकिन उनका अपार प्यार! पास ही छोटी मिठाई की दुकान। बंगाल के गुड़ वाले रसगुल्ले? स्वर्ग का अमृत! ठंडे मौसम में गर्मागर्म बनते, मुंह में घुल जाते। नया बैच तो बिना बोले ताजा ला देते। मना करें: "साहब, खाइए ना, रसगुल्ला तो खाना पड़ेगा!" इसका दाम बिल में जोड़ते, मन में सोचते: "गर्म ले जाऊंगा तो अच्छा लगेगा।"

एक बार दुर्भाग्य—बस से उतरते गिर पड़ा, पैर में फ्रैक्चर। नया जॉइनर, छुट्टियां कम थी। बैंडेज बांधे ब्रांच पहुंचा। सबका खयाल: स्वयं सहायता समूह की महिलाएं बत्तख के अंडे और स्पेशल खीर लाती थीं: "ये कैल्शियम देगा, हड्डी जल्दी जुड़ेगी साहब।" उनका स्नेह देख कर मेरी आँखे नम हो जाती थी।

शादी-विवाह में न्यौता, व्यस्तता में न जा पाए तो बाल्टी भर सब्जी, पूरी, व्यंजन। ब्रांच में लंच के समय प्यार से खिलाते। गर्मी के दिनों में प्रचंड गर्मी पड़ती, न AC न पंखा। 10 बजे टेबल पर आते तो कब दोपहर हुआ और कब शाम हुआ पता ही नहीं चलता । 10 मिनट खाने पर ग्राहक पहरा: "रुको, साहब थक गए, खा लें।" ग्रामीणों का सम्मान, आत्मसंतुष्टि के ये अनमोल पल थे।

## तीन साल का स्वर्णिम दौर

तीन साल ऐसे बीते जैसे पल भर हो। शाखा फुटफॉल रिकॉर्ड और लोन डिस्बर्सल में टॉप रहा। ग्रामीण परिवार जैसे हो गए थे। ट्रांसफर ऑर्डर आया तो दिल बैठा मेरा। बस स्टैंड विदाई—बहुत से ग्राहक रो पड़े: "साहब, मत जाओ! परिवार जैसे हो तुम!" SHG ग्रुप, बड़े बुगुर्गों ने आशीर्वाद दिया, रसगुल्ले खिलाए।

दस-पंद्रह साल गुजर गए। आज भी फोन आते: "साहब, नई स्कीम समझाओ।" वे अभी भी संपर्क में हैं। वो पोस्टिंग मेरे दिल के करीब है।

## जीवन का सबक

आज रायपुर में हूं, लेकिन वो मिट्टी का गांव रोंगटे खड़े कर देता। सोचता हूं—वापस जाऊं, मिलूं, सेवा करूं। बैंकिंग का सार: प्यार, सेवा, बदलाव। धन्यवाद उन ग्रामीण भाइयों-बहनों को सच्चा बैंकर बनाया। ये यादें जीवन भर संजोएंगे।

विवेक कुमार साहू
राजभाषा अधिकारी
मण्डल कार्यालय रायपुर

# मेरी तिरुवनंतपुरम यात्रा

तिरुवनंतपुरम (त्रिवेंद्रम) की यात्रा किसी जादुई सपने से कम नहीं है। केरल की राजधानी होने के नाते, यह शहर न केवल आधुनिक सुख-सुविधाओं का केंद्र है, बल्कि यह अपनी सदियों पुरानी परंपराओं, शांत समुद्र तटों और हरी-भरी पहाड़ियों को भी बड़े प्यार से संजोए हुए है।

## तिरुवनंतपुरम: जहाँ आध्यात्मिकता, प्रकृति और आधुनिकता का संगम होता है

केरल, जिसे 'ईश्वर का अपना देश' (God's Own Country) कहा जाता है, उसकी आत्मा इसके शहर तिरुवनंतपुरम में बसती है। महात्मा गांधी ने इसे 'भारत का सदाबहार शहर' कहा था, और यहाँ की हरियाली को देखकर आप भी इस बात से सहमत हो जाएंगे। मेरी यात्रा इस शहर के समृद्ध इतिहास, शांत समुद्री लहरों और यहाँ के जायके के इर्द-गिर्द बुनी गई एक खूबसूरत दास्तां है।

## 1. आस्था का शिखर: श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर

मेरी यात्रा की शुरुआत दुनिया के सबसे धनी और रहस्यमयी मंदिरों में से एक, श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर से हुई। द्रविड़ और केरल वास्तुकला के मेल से बना यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की 'अनंत शयन' मुद्रा (शेषनाग पर लेटे हुए) के दर्शन करना एक अलौकिक अनुभव है।

महत्वपूर्ण जानकारी: मंदिर में प्रवेश के लिए सख्त ड्रेस कोड (पुरुषों के लिए मुंडू/धोती और महिलाओं के लिए साड़ी) का पालन करना होता है, जो आपको यहाँ की प्राचीन परंपराओं से सीधे जोड़ता है।

अनुभव: मंदिर के स्वर्ण स्तंभ और पत्थर पर की गई बारीक नक्काशी देखकर आप दंग रह जाएंगे। शाम के समय दीपों की रोशनी में यह मंदिर स्वर्ण की तरह चमक उठता है।

## 2. लहरों का संगीत: कोवलम और वरकला बीच

केरल की यात्रा बिना समुद्र तटों के अधूरी है। तिरुवनंतपुरम के पास दो मुख्य रत्न हैं:

### कोवलम बीच

यह अपने अर्धचंद्राकार किनारों और विशाल 'लाइटहाउस' के लिए प्रसिद्ध है। लाइटहाउस बीच पर चढ़कर जब आप अरब सागर के विस्तार को देखते हैं, तो समय जैसे थम जाता है। यहाँ की सफेद रेत और नारियल के पेड़ों की कतारें एक परफेक्ट पोस्टकार्ड जैसी लगती हैं।

### वरकला बीच

शहर से थोड़ी दूर स्थित वरकला अपने 'क्लिफ' (चट्टानों) के लिए मशहूर है। अरब सागर के किनारे ऊँची चट्टानें भारत के किसी और तट पर नहीं दिखतीं। यहाँ का वातावरण बहुत ही शांत और आध्यात्मिक है, जिसे 'पापनाशम बीच' भी कहा जाता है।

## 3. प्रकृति और वन्यजीव: तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर

शहर के बीचों-बीच स्थित तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर भारत के सबसे पुराने चिड़ियाघरों में से एक है। यह केवल जानवरों को पिंजरे में देखने की जगह नहीं है, बल्कि यह एक विशाल वानस्पतिक उद्यान (Botanical Garden) जैसा है। यहाँ की हरियाली और विशाल झीलें इसे शहर के शोर-शराबे से अलग एक शांतिपूर्ण द्वीप बना देती हैं। पास ही स्थित नेपियर म्यूजियम अपनी इंडो-सारसेनिक वास्तुकला के साथ इतिहास प्रेमियों के लिए किसी खजाने से कम नहीं है।

### 4. जटायु अर्थ सेंटर: आधुनिक इंजीनियरिंग और पौराणिक कथा का संगम

मेरी यात्रा का सबसे रोमांचक हिस्सा रहा जटायु अर्थ सेंटर तिरुवनंतपुरम से लगभग 50 किमी की दूरी पर स्थित यह स्थान चदयामंगलम में एक विशाल पहाड़ी पर बना है।

**खासियत:** यहाँ दुनिया की सबसे बड़ी पक्षी प्रतिमा (जटायु) है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, रावण से सीता माता की रक्षा करते समय जटायु इसी पहाड़ी पर गिरे थे।

रोमांच: यहाँ तक पहुँचने के लिए केबल कार का सफर बेहद रोमांचक है, जिससे चारों ओर फैली हरियाली का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। यहाँ एडवेंचर पार्क भी है जहाँ आप ट्रेकिंग और रैपलिंग का आनंद ले सकते हैं।

### 5. केरल की खानपान संस्कृति: स्वाद का उत्सव

केरल का भोजन केवल पेट नहीं भरता, बल्कि आपकी इंद्रियों को तृप्त कर देता है। यहाँ की खानपान संस्कृति में नारियल, चावल और मसालों का अद्भुत मेल है।

**साध्या :** केले के पत्ते पर परोसा जाने वाला पारंपरिक शाकाहारी भोजन, जिसमें चावल, सांभर, अवियल, और पायसम (खीर) जैसे 20 से अधिक व्यंजन होते हैं। इसे खाए बिना केरल यात्रा अधूरी है।

स्ट्रीट फूड और सीफूड: अगर आप मांसाहारी हैं, तो यहाँ का 'करमीन पोलिचथु' (मछली) और 'मालाबार पैरोटा' के साथ चिकन करी लाजवाब होती है।

फिल्टर कॉफी: यहाँ की सुगंधित फिल्टर कॉफी आपकी थकान मिटाने के लिए काफी है।

### 6. शहर का प्राकृतिक सौंदर्य

तिरुवनंतपुरम की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह एक 'कंक्रीट का जंगल' नहीं लगता। सड़कों के किनारे लगे वर्षा-वृक्ष (Rain trees), पहाड़ियों के उतार-चढ़ाव और हर घर के आंगन में लगे केले और नारियल के पेड़ शहर को एक सजीव एहसास देते हैं। यहाँ की अक्कुलम झील और वेली टूरिस्ट विलेज जहाँ झील और समुद्र का मिलन होता है, प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग है।

**निष्कर्ष :** तिरुवनंतपुरम केवल एक गंतव्य नहीं, बल्कि एक एहसास है। यह वह जगह है जहाँ आप सुबह मंदिर की घंटियों से जागते हैं, दोपहर में इतिहास की गलियों में खो जाते हैं, और शाम को समुद्र की लहरों के साथ सुकून तलाशते हैं। जटायु सेंटर की भव्यता से लेकर साध्या के स्वाद तक, यह शहर आपको बार-बार वापस बुलाने का वादा करता है।

अगर आप ऐसी जगह की तलाश में हैं जहाँ मन को शांति और आंखों को सुकून मिले, तो अपना बैग पैक कीजिए और 'सदाबहार शहर' तिरुवनंतपुरम की ओर रुख कीजिए।

**अश्विन कांबले**
प्रबंधक
अंचल कार्यालय रायपुर

# लखपति दीदी योजना – महिला सशक्तिकरण की नई दिशाभूमिका

आज का भारत न केवल आर्थिक रूप से विकसित होने की ओर अग्रसर है, बल्कि महिलाओं को आत्मनिर्भर और सम्मानित स्थान देने की दिशा में भी तेज़ी से कदम बढ़ा रहा है। इसी दिशा में 'लखपति दीदी योजना' एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके तहत ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त और लखपति बनाने पर ज़ोर दिया जा रहा है।

लखपति दीदी योजना भारत सरकार द्वारा दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (के तहत चलाई जाने वाली एक महिला समर्थन योजना है। इसका लक्ष्य यह है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं की वार्षिक आय कम से कम ₹1,00,000 या उससे अधिक हो जाए, ताकि उन्हें "लखपति दीदी" की उपाधि से जोड़ा जा सके।

**उद्देश्य और महत्व :** इस योजना का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं को कौशल विकास, वित्तीय साक्षरता और उद्यमिता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना है। महिलाओं को सिर्फ रहने संभलने के उपकरण नहीं, बल्कि परिवार और समाज की आर्थिक उन्नति का आधार बनने का अवसर दिया जा रहा है। यह योजना ग्रामीण आर्थिक संरचना को बदलने और गरीबी, बेरोजगारी और लैंगिक असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**योजना के प्रमुख लाभ कौशल विकास और प्रशिक्षण :** महिलाओं को सिलाई, खाद्य उत्पादन, पशुपालन, खेती के आधुनिक तरीकों के साथ साथ एलईडी बल्ब बनाना, ड्रोन उड़ाना और डिजिटल बैंकिंग जैसे नए क्षेत्रों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

**कारोबार ऋण और वित्तीय सहायता :** अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए महिलाओं को लगभग 1 लाख से 5 लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त या बहुत कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जाता है।

**बाज़ार तक पहुँच :** योजना के तहत महिलाओं के उत्पादों के लिए आउटलेट और ई कॉमर्स की व्यवस्था की जाती है, ताकि उनके कार्य को सही मूल्य मिल सके।

**लक्ष्य और सफलता :** योजना की शुरुआत 2023 में हुई थी और इसके तहत सरकार का लक्ष्य 3 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाना है। इस दिशा में अब तक लगभग 1–2 करोड़ महिलाएँ लखपति दीदी घोषित हो चुकी हैं, जो योजना की सफलता और ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक उन्नति का स्पष्ट संकेत है।

**निष्कर्ष :** लखपति दीदी योजना केवल रोज़गार देने वाली सरकारी योजना नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण आर्थिक विकास की एक बड़ी दिशानिर्देश है। जब एक लखपति दीदी परिवार की आय को बढ़ाती है, तो इसका प्रभाव बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज की सामाजिक संरचना पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। इस प्रकार लखपति दीदी योजना न केवल "लखपति" बनाने की योजना है, बल्कि भारत के ग्रामीण भविष्य की आधारशिला बन रही है।

# बैंकिंग प्रौद्योगिकीकरण: डिजिटल युग में बदलता स्वरूप

ऋषभ गजभिये
प्रबंधक
अंचल कार्यालय रायपुर

डिजिटल युग ने बैंकिंग की पारंपरिक परिभाषा को पूरी तरह से बदल दिया है। अब बैंक केवल ईंट-पत्थर की इमारतों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि वे हमारे स्मार्टफोन के माध्यम से 24x7 हमारे साथ हैं।

## बैंकिंग प्रौद्योगिकीकरण: एक नई वित्तीय क्रांति

बीते एक दशक में तकनीक ने बैंकिंग क्षेत्र में जो बदलाव किए हैं, वे ऐतिहासिक हैं। 'बैंकिंग' अब एक ऐसी जगह नहीं है जहाँ आप जाते हैं, बल्कि यह एक 'क्रिया' बन गई है जिसे आप कहीं भी, कभी भी कर सकते हैं। बैंक अब भौतिक शाखाओं से निकलकर डिजिटल क्लाउड और मोबाइल ऐप्स में समा गए हैं।

डिजिटल बैंकिंग के प्रमुख स्तंभ

## बैंकिंग के स्वरूप को बदलने में निम्नलिखित प्रौद्योगिकियों ने मुख्य भूमिका निभाई है:

- **यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस):** भारत में यूपीआई ने भुगतान की प्रक्रिया को इतना सरल बना दिया है कि अब एक छोटे से क्यूआर कोड को स्कैन करके पल भर में भुगतान किया जा सकता है।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और चैटबॉट्स:** बैंक अब ग्राहकों की समस्याओं को सुलझाने और व्यक्तिगत वित्तीय सलाह देने के लिए AI का उपयोग कर रहे हैं।
- **ब्लॉकचेन तकनीक:** यह तकनीक लेन-देन को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और छेड़छाड़ मुक्त बनाती है।
- **नियो-बैंकिंग:** ये बिना किसी भौतिक शाखा वाले डिजिटल बैंक हैं जो पूरी तरह से मोबाइल ऐप पर आधारित होते हैं।

## प्रौद्योगिकीकरण के कारण आए प्रमुख बदलाव

| क्षेत्र | पहले की स्थिति | वर्तमान (डिजिटल) स्थिति |
|---|---|---|
| लेन-देन का समय | घंटों बैंक की लाइन में लगना | सेकंडों में मोबाइल ऐप से ट्रांसफर |
| खाता खोलना | कई दिनों की कागजी कार्रवाई | e-KYC के जरिए 5 मिनट में डिजिटल खाता |
| ऋण | हफ्तों का सत्यापन समय | डेटा एनालिटिक्स के आधार पर इंस्टेंट लोन |
| उपलब्धता | सुबह 10 से शाम 4 बजे तक | 24x7x365 (कभी भी, कहीं भी) |

## डिजिटल बैंकिंग के लाभ

डिजिटल परिवर्तन ने अर्थव्यवस्था और ग्राहकों दोनों के लिए कई फायदे पैदा किए हैं:

- **वित्तीय समावेशन:** जन धन योजना और डिजिटल बैंकिंग के मेल से दूर-दराज के गांवों तक बैंकिंग सेवाएँ पहुँची हैं।
- **लागत में कमी:** बैंकों के लिए कागजी कार्रवाई और

भौतिक बुनियादी ढांचे का खर्च कम हुआ है, जिसका लाभ कम शुल्क के रूप में ग्राहकों को मिलता है।

- **पारदर्शिता:** हर लेन-देन का डिजिटल पदचिह्न होने से काले धन और धोखाधड़ी पर लगाम लगी है।

### चुनौतियाँ और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ

प्रौद्योगिकी के साथ-साथ नई तरह की चुनौतियाँ भी सामने आई हैं:

- **साइबर सुरक्षा:** हैकिंग, फिशिंग और मैलवेयर हमलों का खतरा हमेशा बना रहता है।
- **डिजिटल साक्षरता:** ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीक की समझ की कमी के कारण लोग अक्सर ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार हो जाते हैं।
- **तकनीकी निर्भरता:** सर्वर डाउन होने या खराब इंटरनेट कनेक्टिविटी के कारण लेन-देन में बाधा आना एक बड़ी समस्या है।

### भविष्य की राह: बैंकिंग 4.0

भविष्य की बैंकिंग और भी अधिक सहज होगी। 'ओपन बैंकिंग' के जरिए ग्राहक अपने डेटा को विभिन्न वित्तीय संस्थानों के साथ साझा कर सकेंगे ताकि उन्हें बेहतर सेवाएं मिल सकें। इसके अलावा, सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी या ई-रुपया भौतिक मुद्रा की आवश्यकता को और कम कर देगा।

### निष्कर्ष

डिजिटल युग में बैंकिंग का बदलना केवल सुविधा का विषय नहीं है, बल्कि यह देश की आर्थिक प्रगति का आधार है। यह हमें एक 'कैशलेस' और 'पेपरलेस' समाज की ओर ले जा रहा है। यदि हम सुरक्षा के प्रति जागरूक रहें और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दें, तो तकनीकी बैंकिंग हमारे जीवन को और भी सरल और समृद्ध बनाएगी।

**सुरक्षा टिप:** अपने डिजिटल ट्रांजेक्शन को सुरक्षित रखने के लिए कभी भी अपना ओटीपी, पिन या पासवर्ड किसी अज्ञात व्यक्ति के साथ साझा न करें। बैंक कभी भी फोन पर आपसे ये जानकारी नहीं मांगते।

# मंजिल की जिद

**मसला नहीं छालों का पैरों में जो जाना,**
**मसला तो है मंजिल तक पहुँच पाना**

**जलन इन छालों में नहीं दिल में जलाएँ,**
**आग ऐसी की पत्थर भी राख जो जाए।**

**ऐसा न हो कि लोग तुम्हें बस देखें बस यूं ही,**
**जिद ये हो कि सब तुम्हें खोजें हर कहीं।**

**कमल किशोर झा**
मुख्य प्रबंधक
मंडल कार्यालय : बिलासपुर

# युद्ध और मानवता: विनाश के साये में सिसकती सभ्यता

**ईश्वर साहू**
कार्यालय सहायक
मण्डल कार्यालय रायपुर

मानव इतिहास सभ्यताओं के निर्माण और उनके विनाश की गाथाओं से भरा पड़ा है। विडंबना यह है कि जिस मनुष्य ने प्रेम, करुणा और सह-अस्तित्व के सिद्धांत गढ़े, उसी ने अपनी महत्वाकांक्षाओं की वेदी पर 'युद्ध' जैसा क्रूर देवता भी स्थापित किया। आज हम 21वीं सदी के तीसरे दशक में हैं, जहाँ विज्ञान और तकनीक ने हमें चाँद-सितारों तक पहुँचा दिया है, लेकिन धरातल पर मानवता आज भी आदिम युग की तरह लहूलुहान है। युद्ध और मानवता एक-दूसरे के धुर विरोधी हैं; जहाँ युद्ध शुरू होता है, वहाँ मानवता का अंत निश्चित है।

### युद्ध का स्वरूप और बदलती तकनीक

प्राचीन काल में युद्ध तलवारों और तीरों से लड़े जाते थे, जहाँ आमने-सामने की लड़ाई में वीरता का प्रदर्शन होता था। लेकिन आज युद्ध का स्वरूप पूरी तरह बदल चुका है। आधुनिक युग 'बटन-वॉर' का युग है। ड्रोन हमले, मिसाइल तकनीक, साइबर युद्ध और परमाणु हथियारों के डर ने युद्ध को अधिक घातक और अमानवीय बना दिया है। आज युद्ध केवल सीमाओं पर सैनिकों के बीच नहीं होता, बल्कि इसके केंद्र में निर्दोष नागरिक, बच्चे और महिलाएं आ चुके हैं।

### वर्तमान परिदृश्य: जलती हुई दुनिया (2026 के संदर्भ में)

आज जब हम वैश्विक परिदृश्य पर दृष्टि डालते हैं, तो शांति केवल एक शब्द बनकर रह गई है। दुनिया के कई हिस्सों में बारूद की गंध हवा में घुली हुई है।

रूस-यूक्रेन संघर्ष: फरवरी 2022 से शुरू हुआ यह युद्ध 2026 में भी एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। यह केवल दो देशों की लड़ाई नहीं, बल्कि एक मानवीय त्रासदी बन चुका है। यूक्रेन के लगभग 20% हिस्से पर रूसी नियंत्रण, लाखों लोगों का विस्थापन और बुनियादी ढांचे का विनाश इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक युग में भी भू-राजनीतिक स्वार्थ मानवता से ऊपर हैं। इसने यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का सबसे बड़ा शरणार्थी संकट पैदा किया है।

**मध्य पूर्व की अशांति (इज़राइल-फिलिस्तीन और क्षेत्रीय तनाव):** गाजा पट्टी और लेबनान के क्षेत्रों में जारी हिंसा ने मानवता को शर्मसार कर दिया है। हज़ारों मासूम बच्चों की मौत, अस्पतालों पर हमले और अकाल जैसी स्थितियों ने अंतरराष्ट्रीय कानूनों की प्रासंगिकता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। हाल के समय में ईरान और इज़राइल के बीच बढ़ता

सीधा टकराव दुनिया को एक 'तीसरे विश्व युद्ध' के मुहाने पर ले आया है।

**सूडान और म्यांमार का संकट:** जहाँ दुनिया का ध्यान बड़े देशों के टकराव पर है, वहीं सूडान का गृहयुद्ध और म्यांमार में सैन्य शासन के विरुद्ध संघर्ष ने लाखों लोगों को भुखमरी और हिंसा की आग में झोंक दिया है। सूडान में आज दुनिया का सबसे बड़ा विस्थापन संकट है, जहाँ मानवता बुनियादी सुविधाओं के लिए तरस रही है।

### मानवता पर युद्ध के घातक प्रभाव

युद्ध केवल ज़मीन के टुकड़ों के लिए नहीं होता, बल्कि यह एक पूरी पीढ़ी के भविष्य को नष्ट कर देता है। इसके प्रभाव बहुआयामी और दीर्घकालिक होते हैं:

**जीवन की अपूरणीय क्षति:** युद्ध का सबसे पहला और प्रत्यक्ष शिकार मनुष्य का जीवन है। सैनिक तो वीरगति को प्राप्त होते ही हैं, परंतु लाखों नागरिक जो इस राजनीति का हिस्सा भी नहीं होते, वे भी अपनी जान गंवा देते हैं।

**मनोवैज्ञानिक आघात:** युद्ध की विभीषिका झेलने वाले लोग, विशेषकर बच्चे, जीवनभर के लिए मानसिक आघात का शिकार हो जाते हैं। धमाकों की आवाज़ें और अपनों को खोने का गम उनकी आत्मा को छलनी कर देता है।

**आर्थिक पतन और भुखमरी:** युद्ध के कारण कृषि और उद्योग ठप हो जाते हैं। वर्तमान में रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक स्तर पर खाद्यान्न संकट और महंगाई बढ़ी है। जब पैसा हथियारों पर खर्च होता है, तो शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे बुनियादी क्षेत्र उपेक्षित हो जाते हैं।

**पर्यावरणीय विनाश:** आधुनिक हथियारों और रासायनिक बमों का प्रयोग प्रकृति को ऐसी क्षति पहुँचाता है जिसकी भरपाई सदियों में भी संभव नहीं है। मिट्टी की उर्वरता और जल स्रोतों का ज़हरीला होना आने वाली पीढ़ियों के अस्तित्व पर संकट पैदा करता है।

### नैतिकता और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की विफलता

संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसी संस्थाओं की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी कि भविष्य में युद्धों को टाला जा सके। लेकिन वर्तमान परिदृश्य यह दर्शाता है कि शक्तिशाली देश अपने हितों के लिए इन संस्थाओं को ठेंगा दिखा रहे हैं। वीटो पावर का दुरुपयोग और कूटनीति की विफलता ने दुनिया को और अधिक असुरक्षित बना दिया है। जब शक्तिशाली राष्ट्र केवल अपने हथियार उद्योग को बढ़ावा देने के लिए युद्धों को हवा देते हैं, तब मानवता का नैतिक पतन चरम पर होता है।

"युद्ध कभी यह तय नहीं करता कि कौन सही है, वह केवल यह तय करता है कि कौन बचा है।" — बर्ट्रेंड रसेल

### निष्कर्ष: बुद्ध या युद्ध?

आज मानवता एक दोराहे पर खड़ी है। एक तरफ 'युद्ध' का मार्ग है जो सर्वनाश की ओर जाता है, और दूसरी तरफ शांति, संवाद और 'बुद्ध' का मार्ग है। परमाणु हथियारों के इस दौर में अब 'विजेता' कोई नहीं होगा; जो बचेगा वह केवल राख और पछतावा होगा।

समय की मांग है कि वैश्विक नेता संकीर्ण राष्ट्रवाद और विस्तारवादी नीतियों को त्याग कर मानवतावाद को प्राथमिकता दें। हमें यह समझना होगा कि हम सब एक ही नौका में सवार हैं। यदि एक हिस्सा डूबेगा, तो पूरी मानवता का अंत निश्चित है। शांति का अर्थ केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि न्याय और प्रेम की उपस्थिति है। यदि हम आने वाली पीढ़ियों को एक रहने योग्य दुनिया देना चाहते हैं, तो हमें हथियारों की होड़ छोड़कर 'वसुधैव कुटुंबकम' (पूरी पृथ्वी एक परिवार है) के विचार को आत्मसात करना ही होगा।

**अंतिम शब्द:** मानवता की रक्षा किसी एक देश का उत्तरदायित्व नहीं, बल्कि सामूहिक कर्तव्य है। बारूद के ढेर पर बैठकर शांति की बातें करना बेमानी है; शांति के लिए दिल और दिमाग दोनों से नफरत को निकालना अनिवार्य है।

# सोच

विनीता आनंद
उप-प्रबंधक
मंडल कार्यालय, राँची

सोच बड़ी नहीं तो सोच कैसी
सोच नहीं तो मन पर बोझ कैसी

सोच से ही जज्बा और इरादे
सोच नहीं तो पूरी होती नहीं मुरादे

सोच सही तो ना करो संकोच
सोच सही तो कभी ना होगा आक्रोश

खो रहे है बिना सोच के होश
अब कैसे दिखेगा इसमें आक्रामक  जोश

सोच वही जो राह दिखाए
सही सोच से सब कुछ मिल जाए

सोच बड़ी नहीं तो सोच कैसी
सोच नहीं तो मन पर बोझ कैसी

सोच से ही जिंदगी की सुबह और शाम
सोच से ही बढ़ रहा मन का विश्वास

चलो आओ सोच को और मजबूत बनाए
हँसते हँसते बुलंदियों को पाए

सोच से उठे क्रांति की लहर,
सोच से खिलता सृजन का शहर।

सोच में है जग की शक्ति,
सोच से ही होती भक्ति।

मन रखो निर्मल, सोच हो विमल ,
जीवन फिर बने सच्चा और सफल।

सोच बड़ी नहीं तो सोच कैसी ,
बड़ा सोचने में संकोच कैसी ।

सोच से ही जज्बा और इरादे
सोच नहीं तो पूरी होती नहीं मुरादे

सोच सही वहीं जो सही राह दिखाए,
सही सोच से सब कुछ मिल जाए।

सोच हमारी पहचान बनाती,
राहें नई यह खुद दिखाती।

ऊँची सोच तो बने उड़ान,
नीची सोच तो बने थकान ।

सच्ची सोच से हो  शक्ति का प्रवाह,
नहीं तो रुक जाए जीवन की हर राह।

आओ सोचें सुंदर, सोचें सच्चा,
सही सोच बनाती जीवन को अच्छा।

# विविध गतिविधियां

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर मण्डल कार्यालय : बिलासपुर के स्टाफ सदस्य - उप मण्डल प्रमुख श्री दिव्य रंजन नायक (मध्य), मुख्य प्रबंधक श्री कमाल किशोर झा, श्री राजेश कुमार और श्री विनय ढेमता

आदरणीय अंचल प्रबंधक श्री आशीष कुमार चतुर्वेदी जी एवं मंडल प्रमुख श्री जगदीश राय जी की एसईसीएल के वित्त निदेशक और वित्त प्रमुख से मुलाक़ात

रीटेल आउटरिच कार्यक्रम दिनांक 14, नवम्बर 2025 के अवसर पर मंच पर श्री सुरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा जी (महाप्रबंधक, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रधान कार्यालय), श्री जगदीश राय जी एवं पीएलपी (आरएएम) प्रमुख श्री आलोक कुमार तथा पीएनबी के सम्मानित ग्राहक और विभिन्न शाखाओं के शाखा प्रमुख।

मंडल कार्यालय स्तरीय "ताल तरंग" कार्यक्रम के अवसर पर मंडल प्रमुख श्री जगदीश राय जी द्वारा दीप प्रज्वलन तथा अतिथियों का स्वागत।

मण्डल कार्यालय रायपुर के अंतर्गत शाखा माना के निकट एटीएम स्थापित किया गया। जिसका उद्घाटन माननीय अरुण देव गौतम, पुलिस महानिदेशक, छत्तीसगढ़ द्वारा किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धमतरी द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पंजाब नेशनल बैंक, शाखा धमतरी के स्टाफ सदस्यों को विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालोद के तत्वावधान में पंजाब नेशनल बैंक, शाखा बालोद द्वारा सरस्वती शिशु मंदिर बालोद में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति , जगदलपुर द्वारा पंजाब नेशनल बैंक शाखा जगदलपुर को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु विशिष्ट योगदान का प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया

दिनांक 14 नवम्बर 2025 को रायपुर में रीटेल आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान कार्यालय से मुख्य महाप्रबंधक श्री सुमेश कुमार उपस्थित हुए।

झारखण्ड राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन से शिष्टाचार भेंट करते मंडल प्रमुख श्री अवधेश झा एवं उप-मंडल प्रमुख श्री राकेश श्रीवास्तव

उप-अंचल प्रमुख श्री मनीष देवबर्मा का मंडल कार्यालय में स्वागत करते मंडल प्रमुख श्री अवधेश झा एवं उप-मंडल प्रमुख श्री राकेश श्रीवास्तव

प्रधान कार्यालय से पधारे श्री शैलेन्द्र सिंह बोरा का मंडल कार्यालय में स्वागत करते मंडल प्रमुख श्री अवधेश झा

# मण्डल कार्यालयों की गतिविधियां

पंजाब नैशनल बैंक, बोकारो मंडल द्वारा पूरे मंडल में 27 अक्टूबर 2025 से 02 नवम्बर 2025 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया एवं भ्रष्टाचार एवं धोखाधड़ी के प्रति लोगों को सतर्क और जागरूक किया गया। इस उपलक्ष्य में मंडल प्रमुख श्री राजेश श्रीवास्तव की अगुवाई में 30 अक्टूबर को पीएनबी आवासीय बैंक कॉलोनी, सेक्टर 5, बोकारो में के.एम मेमोरियल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

मंडल प्रमुख श्री राजेश श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में मंडल कार्यालय द्वारा दिनांक 11.01.2026 को आयोजित खेल उत्सव 2026 कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मंडल के समस्त इच्छुक स्टाफ सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

सेल द्वारा आयोजित हाफ मैराथन में पीएनबी बोकारो मंडल के स्टाफ द्वारा सहभागिता की झलकियाँ

मंडल कार्यालय बोकारो द्वारा दिनांक 26.01.2026 को आयोजित गणतंत्र दिवस की झलकियाँ

झारखण्ड राज्य एवं पंजाब नैशनल बैंक के बीच सरकार के कर्मियों के लिए सैलरी बचत खाता के समझौता ज्ञापन (MoU) का आदान-प्रदान करते श्रीमती संध्या गुप्ता , अपर निदेशक, झारखण्ड सरकार एवं श्री अवधेश झा , मंडल प्रमुख , राँची ।

झारखण्ड राज्य एवं पंजाब नैशनल बैंक के बीच सरकार के कर्मियों के लिए सैलरी बचत खाता के लिए समझौता ज्ञापन (MoU) समारोह में राज्य के कर्मियों को संबोधित करते माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन ।

# कृषि अवसंरचना कोष (AIF)

## कृषि को बढ़ावा : प्रगतिशील विकास का मार्ग प्रशस्त करना

- एकीकृत प्राथमिक द्वितीयक प्रसंस्करण परियोजनाएँ अब पात्र हैं
- सीजीटीएमएसई और नबसंरक्षण योजना के अधीन 2 करोड़ रुपये तक के ऋण के लिए ऋण गारंटी
- पीएम-कुसुम घटक-ए : अब स्वच्छ ऊर्जा और कृषि अवसंरचना को आगे बढ़ाने के लिए किसानों और सामूहिक संगठनों के लिए कृषि अवसंरचना कोष (AIF) के साथ संमिलन है
- व्यक्तिगत लाभार्थी अब व्यवहार्य कृषि परिसंपत्तियों के लिए आवेदन कर सकते हैं, जिसमें हाइड्रोपोनिक, मशरूम, वर्टिकल, एरोपोनिक खेती, पॉलीहाउस/ग्रीनहाउस सुविधाएँ शामिल हैं

---

**3%** 7 सालों तक 2 करोड़ रुपये तक के ऋण के लिए 3% ब्याज अनुदान

सीजीटीएमएसई योजना के अधीन 2 करोड़ रुपये तक की ऋण गारंटी

**25** 2 करोड़ रुपये प्रति इकाई की 25 परियोजनाओं तक।*

कृषि अवसंरचना कोष के अधीन लाभों को अन्य सरकारी अनुदानों के साथ जोड़ा जा सकता है।

अनुसरण करें : www.pnbindia.in | टोल फ्री नम्बर 1800-1800 & 1800-2021 | 1800 180 8888 पर मिस्ड कॉल करें

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank ...the name you can BANK upon !

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : support@anjaniprakashan.com